SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:54, Issue: 10
MARCH-2024, Price Rs.20/-
No. of pages-56

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

मार्च-2024

रु.20/-

तिरुमल
श्री मलयप्पस्वामीजी का प्लवोत्सव

20-03-2024 से
24-03-2024 तक

SIVAPRASAD

दि. 22-01-2024 को अयोध्या, उ.प्र. में संपन्न 'बालक राम विग्रह प्राण प्रतिष्ठा' कार्यक्रम में भाग लेते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.करुणाकर रेड्डी जी।

दि. 16-01-2024 को तिरुपति में स्थित श्री रामचंद्र पुष्करिणी के पास संपन्न 'कोटि हनुमान चालीसा पारायण' महायज्ञ में श्री सीताराम, श्री हनुमान भगवान जी को आरती देते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.करुणाकर रेड्डी जी।

दि. 21-01-2024 को तिरुमल, नादनीराजन मंडप में संपन्न छठी किस्त 'श्रीमद्रामायण अयोध्या कांड' अखंड पारायण के दृश्य।

दि. 19-01-2024 को तिरुमल में श्रीवारि सेवासदन-1 में उत्तरप्रदेश, अयोध्या में बालक राम विग्रह प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर, तिरुमल श्री बालाजी का लड्डू प्रसाद भेंट के रूप में भेजते हुए दृश्य। चित्र में ति.ति.दे. के अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी (एफ.ए.सी.,) श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., और अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया।

दि. 22-01-2024 को तिरुपति में स्थित अन्नमाचार्य कलामंदिर में अयोध्या बालक राम जी का विग्रह प्राण प्रतिष्ठापन के संदर्भ में अन्नमाचार्य परियोजना के कलाबृंद के द्वारा आयोजित 'अन्नमय्या संकीर्तना अखंड महायज्ञ' कार्यक्रम के दृश्य।

दि. 22-01-2024 को तिरुमल धर्मगिरि में स्थित वेदविज्ञान पीठ के द्वारा 'संपूर्ण वाल्मीकि रामायण पारायण' कार्यक्रम के दृश्य।

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम्॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-१२)

न तो ऐसा ही है कि मैं किसी काल में नहीं था या तू नहीं था अथवा ये राजा लोग नहीं थे और न ऐसा ही है कि इससे आगे हम सब नहीं रहेंगे।

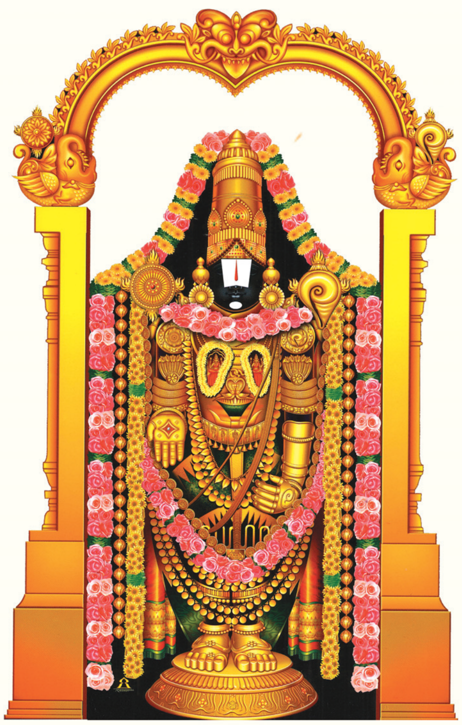

येंतमात्रमु येव्वरु दलचिन अंतमात्रमे नीवु
अंतरांतरमुलेंचि चूड पिंडंते निप्पटि यन्नट्लु ॥येंत॥

कोलुतुरु वैष्णवुलु कूरिमितो विष्णुडनि
पलुकुदुरु वेदांतुलु परब्रह्मंबनुचु
तलतुरु मिमु शैवुलु तगिन भक्तुलनु शिवुडनुचुनु
अलरि पोगुडुदुरु कापालिकुलु आदिभैरवुडनुचु ॥येंत॥

सरिनेन्नुदुरु शाक्तेयुलु शक्तिरूपु नीवनुचु
दरशनमुलु मिमु नानाविधुलनु
तलपुल कोलदुल भजिंतुरु
सिरुल मिम्मु ने यल्पबुद्धि
तलंचिन वारिकि नल्पंबवुदुवु
गरिमल मिमु ने घनमनि तलचिन घनबुद्धुलकु घनुडवु ॥येंत॥

नीवलन कोरतेलेदु मरि नीरु कोलदि तामेरवु
आवल भागीरथि दरि बावुल आ जलमे ऊरिनयट्लु
श्रीवेंकटपति नीवैते ममु जेकोनि उन्न दैवमनि
ई वलने नी शरणनि येदनु निदिये परतत्वमु नाकु ॥येंत॥

'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन जैसी।' - हे अंतर्यामी! कुछ लोग तो 'विष्णु' के रूप में तुम्हारी आराधना करते हैं। वेदविद् तुम्हें 'परब्रह्म' कहते हैं। शिव, आदिभैरव, शक्ति के रूपों में भी भक्तजन तुम्हारी पूजा करते हैं। दर्शन शास्त्र तो अनेकानेक रूपों में तुम्हारा वर्णन करता है। अपनी अल्पबुद्धि से कुछ लोग, तुम्हें न्यून भाव से देखते हैं। लेकिन तुम्हें महान समझनेवालों को तो तुम 'महतोमहीयान' लगते हो। यह तो सही है कि आटा जितना हो, रोटी उतनी ही बनती है न? भागीरथी (गोदावरी) नदी के पास के कुएँ में जिस तरह उसी नदी का पानी उभरता है और जहाँ जितना पानी हो, उतने ही कमल खिलने की तरह, भक्त का हृदय जितना विशाल और विनम्र होता है, उतना ही भगवदनुभव उन्हें होगा न? इसीलिए मैं, श्री वेंकटाचलपति को ही अपना देवता मानकर उनकी शरण में आया हूँ।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्री वेंकटेश्वर अन्नप्रसाद ट्रस्ट

तिरुमल, तिरुचानूर में हजारों की संख्या में भक्तों को प्रतिदिन अन्नप्रसाद वितरण होने की बात भक्तों को विदित ही है। अब ति.ति.दे अन्नप्रसाद ट्रस्ट ने भक्तों, दाताओं को दान देने का और खूना अक्सर देना चाहता है। इसलिए एक दिन दान की योजना प्रवेश कर रहा है।

एक रोजाना खर्च -

1. एक दिन - 38 लाख
2. अल्पाहार - 8 लाख
3. मध्याह्न भोजन - 15 लाख
4. रात्रि भोजन - 15 लाख

इस नकद को दाताओं से संग्रहित करने के लिए सिद्ध हो रहा है। तिरुमल तिरुपति देवस्थानों का अन्नदान ट्रस्ट दाताओं - व्यक्तियों/कंपनियों/संस्थाओं/ट्रस्टों/संयुक्त ढंग की व्यवस्था हो सकती है। ये रोजवारी नकद कुल 25 लाख या अल्पाहार - 5 लाख, दोपहर का भोजन - 10 लाख या रात्रि भोजन - 10 लाख प्रदान कर सकते हैं। दाताओं को ति.ति.देवस्थान के द्वारा आयोजित सुविधाएँ एक रीत होंगी। अपने मर्जी के अनुसार सूचित एक दिन पर अन्नदान कर सकती है। और दाता का नाम भी अन्नदान केंद्र में डिसूप्ले होता है।

अन्य विवरण के लिए संपर्क करें -
उप कार्यकारी अधिकारी (डोनार सेल) FAC.,
ति.ति.दे., तिरुमल।
(cdmc.ttd@tirumala.org / www.tirumala.org वेबसाइट में भी दरसा सकेंगे)
दूरभाषा - 0877-2263001 & 0877-2263472.

(सूचना - उपर्युक्त विषयों पर परिवर्तन होनी की संभावना है।)

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-54 मार्च-2024 अंक-10

विषयसूची

महाशिवरात्रि	श्री बी.करुणाकर रेड्डी	07
शिवरात्रि की गरिमा	डॉ.के.सुधाकर राव	10
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	13
होली	कुमारी एम.रोहिणी	16
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यड्लपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	18
लक्ष्मी जयंती	डॉ.एच.एन.गौरीराव	22
तिरुमल, श्री वेंकटेश्वर धार्मिक सभा में विविध मठाधिपति, पीठाधिपतियों का दिव्य अनुग्रह भाषण		31
गुरु द्रोणाचार्य	डॉ.जी.सुजाता	40
उत्तरा	डॉ.के.एम.भवानी	43
सरसों के बीज का आयुर्वेदिक दृष्टिकोण	डॉ.सुमा जोषि	45
आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!!	श्री अवधेष कुमार शर्मा	47
मार्च महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	48
नीतिकथा - राजा शिबी सम्राट का त्याग	डॉ.शेक षावली	49
चित्रकथा - कुबेर का गर्व भंग	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 20		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री पुंडरीकवल्लि, श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर, तिरुपति।

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता

हमारे सनातन हैंदव संस्कृति सांप्रदाय में (महिला) स्त्रि को अधिक प्राधान्य दिया है। हिन्दू संप्रदाय में किसी भी धार्मिक अनुष्ठान, हवन, पूजा या व्रत पत्नी के सहभाग के बिना पूर्ण नहीं होती। स्त्री मूर्ति... माँ, पत्नी, बेटी, बहन के रूप में परिवार के अभ्युन्नति में महोन्नत भूमिका निबाति है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' अथवा 'सर्वे सुखिनः सन्तु', जैसा प्रार्थना की है।

मनु स्मृति में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।' अर्थात् जिस स्थान पर नारी की पूजा होती है। वहाँ देवता वासित होते हैं। ऐसा कहा गया है। महिलाओं के लिए एक दिन नहीं, अपितु प्रत्येक दिन ही हिन्दू धर्म ने दिया है।

स्त्री को सृजन शक्ति माना जाता है अर्थात स्त्री मूर्ति से ही मानव जाती का विकास - अस्तित्व माना गया है। इस सृजन की शक्ति को विकसित - परिष्कृति कर उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, न्याय, विचार, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता अवसर की समानता का अक्सर प्रदान करना ही नारी का सशक्तिकरण का आशय है।

वैदिक और ऐतिहासिक रूप में देखे तो, सीता माता, द्रौपदी, सत्यभामा, मंडोदरी, अरुंदति, वेंगमांबा, मीराबाई, झांसी रानी, रानी रुद्रमदेवी... जैसे कई पतिव्रता नारियाँ, वीरवनिताएँ हम जानते हैं।

किसी समाज के प्रभावशाली विकास के लिए महिलाओं के सशक्तीकरण जैसा कोई साधन नहीं।

किसी भी समाज को सभ्य समाज का दर्जा तब तक नहीं प्राप्त होता जब तक उस समाज की नारी का सशक्तीकरण न हो, जब तक उस समाज में नारी को समान अधिकार न हो। हर युग में भारत में ऐसे संतों का अवतरण हुआ, जिन्होंने प्रखरता के साथ नारी सशक्तीकरण की बात कही। इन्हीं में से एक कबीर दास भी थे। जिन्होंने कहा था कि ''गये रोये हंसि खेलि के, हरत सबौं के प्राण कहै कबीर या घात को समझै संत सुजान'' अर्थात् गाकर, रोकर, हंसकर या खेल कर नारी सब के प्राण हर लेती हैं।

महिला सशक्तीकरण यानी महिलाओं की आध्यात्मिक, राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक शक्ति में वृद्धि करना, ये सब कुछ कब प्राप्त होता है की बालिका शिक्षा से मात्र ही साध्य होता हैं। महिला का विकास-परिवार का विकास-और देश का विकास भी है।

❀ ❀ ❀

महाशिवरात्रि

तेलुगु मूल
श्री बी.करुणाकर रेड्डी
ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष

अनुवादक - श्री सुधाकर रेड्डी

तिरुपति एक महापुण्यक्षेत्र है, जो असंख्य महिमाओं का निवास स्थान है, पुराणों के अनुसार इस तिरुपति को कलियुग वैकुंठ कहकर महिमामंडित करते हैं। आधुनिक समय में ऊपरी पहाडी भाग को तिरुमल नाम से और निचले स्थान को तिरुपति शहर के नाम से जाना जाता है। लेकिन पहले ऊपरी और निचले क्षेत्रों को परंपरावादियों ने तिरुपति क्षेत्र ही मानते थे।

यह तिरुपति क्षेत्र हरिहराभेद है। कपिलतीर्थ सरोवर के किनारे पहाडी के निचले हिस्से में श्री कामाक्षी सहित भगवान श्री कपिलेश्वर का दिव्य निवास है। जो इस पहाड के लिए प्रथम स्थान है। यह पहाडी की शुरुआत है। श्री वेंकटेश्वर सहस्रनाम के अनुसार प्रचलित नाम - ''उपत्यका प्रदेशस्य शंकर ध्यात मूर्तये नमः'' (वह व्यक्ति जिसने नीचे बीहाडियों में भगवान शिव का ध्यान किया था, इसीलिए वह महान था)। वेंकटाचल माहात्म्यम में विवाह को जोडने के लिए श्रीनिवास ने वकुलामाता को आकाशराज के पास भेजा है। उस समय श्रीनिवास ने वकुलमाता को बताया कि बालक श्रीनिवास कामाक्षीवरद का आशीर्वाद माँग रहा था। वकुलमाता ने श्रीनिवास की आज्ञा का पालन करते हुए, जहाँ आकाशराज रहते थे, वहाँ गई और श्रीनिवास कल्याण की तैयारियाँ की।

शिव ज्ञानदाता है, श्रीहरि मोक्ष दाता है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए ज्ञान ही रीढ़ है।

यह सर्वविदित है कि विष्णु आमतौर पर शिव मंदिरों में मौजूद होते हैं और शिव विष्णु मंदिरों के अधिपति है। तिरुमल क्षेत्राधिपति रुद्र है। तिरुमल में महाशिवरात्रि को क्षेत्रपालकोत्सव के रूप में वर्णित किया जाता है। क्षेत्राधिपति रुद्र वर्तमान में श्री बालाजी मंदिर के दो किलोमीटर की दूरी पर गोगर्भ तीर्थ तट पर विराजमान हैं। प्रत्येक महाशिवरात्रि पर उस क्षेत्राधिपति को सुगंध द्रव्यों से अभिषेक करना आचार एवं परंपरा है।

माघ बहुल चतुर्दशी की आधी रात को महाशिवरात्रि पर्व दिन मनाया जाता है। लिंग महापुराण में महाशिवरात्रि व्रत का उल्लेख है, स्कंदपुराणांतर्गत ब्रह्मोत्सव खंड में एक महान कथा है, जिसमें लिंग कारण में शिवरात्रि की महिमा का वर्णन किया गया है। इस शिवरात्रि व्रत करनेवाले भक्त भक्ति भाव से सुनते हैं। शिवलिंग भौतिक एवं अभौतिक पूजा का समन्वयात्मक रूप है। शिवरात्रि के दिन शिवलिंग की पूजा ही प्रधान है। व्रत और जागरण (रात भर न सोना) के साथ-साथ चारो पहरों की रात्रि में भगवान शिव का अभिषेक और पूजन करने से पाप नष्ट हो जाते हैं।

भगवान शिव सृष्टि के स्रोत है। भगवान शिव पहली बार ब्रह्म और विष्णु के बीच संघर्ष को समाप्त करने के लिए माघ बहुला चतुर्दशी की आधी रात में अग्निलिंग के रूप में प्रकट हुए थे, तो उस दिन को महाशिवरात्रि के रूप में माना जाता है। परंतु पुराणज्ञों द्वारा इन शिवरात्रियों को पांच प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है।

1) नित्यशिवरात्रि : प्रतिदिन भगवान शिव की भक्ति करना, पूजा करना, रात में भगवान शिव को याद करते हुए सोना चाहिए।

2) पक्षरात्रि : हर शुक्ल और कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी रात्रि शिव की आराधना के लिए तत्पर रहना, पूजा करना और रात्रि में शिव का स्मरण करते हुए शयन करना चाहिए।

3) मासशिवरात्रि : प्रत्येक माह के कृष्ण पक्ष में आनेवाली चतुर्दशी की रात्रि को शिव पूजा का संकल्प लेना, पूजा करना और रात्रि में शिव का स्मरण करते हुए शयन करना चाहिए।

4) महाशिवरात्रि : माघ मास बहुला पर पुराणों में बताए गए विषय के अनुसार शिव पूजा करे।

5) योगशिवरात्रि : एक बुद्धिमान व्यक्ति अपना मन भगवान शिव में लगाता है और सांसारिक दुनिया की उपेक्षा करता है। संत शिवरात्रि के माध्यम से शिव के प्रति

अपनी भक्ति बढ़ाने और मानव जीवन को विकसित करने की सलाह देते है। इन पांच शिवरात्रियों में से महाशिवरात्रि को सभी भारतीय अलग-अलग तरीकों से शिव की पूजा करके त्यौहार मनाते हैं। पंचबिल्व, (तुलसी, धतूरा, अबीर, गुलाल, उम्बी) रूद्राक्ष, भस्म और बिल्व पत्र भगवान शिव को प्रसन्न करनेवाली वस्तुएँ मानी जाती है। बिल्व पत्र स्पर्श और सुगंध बहुत स्वास्थ्यदायक है। बुजुर्गों द्वारा बताया जाता है कि बिल्व रस और कषाय को सेवन करने से गर्मी, पित्त, श्वास संबंधित रोग आस्थमा, मधुमेह और रक्तचाप से राहत मिलता है।

पुराणों में शिवपूजा की महिमा का बखान किया गया है। इसके अलावा, यह कहावत है कि जो मानव जन्म मिला है, इस केलिए धन्यवाद के रूप में जीवन में कम से कम एक बार शिवरात्रि व्रत का अभ्यास करने का उपदेश देते हैं - ''जन्म को शिवरात्रि'' इस शिवरात्रि पर द्वादश ज्योतिर्लिंग क्षेत्रों की पूजा करना या काशी, श्रीशैलम्, श्रीकालहस्ती जैसे महाक्षेत्रों में से कुछ महाक्षेत्रों में जाकर पूजा करना शाश्वत भारतीय परंपरा है। हमारे महान भारत में हम विभिन्न अनुष्ठानों वेशभूषा और मंत्रों के साथ जीवन बिताते रहते है। लेकिन ऐसे महापर्व भारतीयों के बीच एकता लाते है। शिवरात्रि को अनंतकाल के प्रवाह में एक बड़ा त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। इस महाशिवरात्रि के दिन आइए हम अपने पूर्वजों द्वारा प्रचलित शिवपूजा की परंपरा को जारी रखे।

❀ ❀ ❀

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुपति

श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

29-02-2024 से 10-03-2024 तक

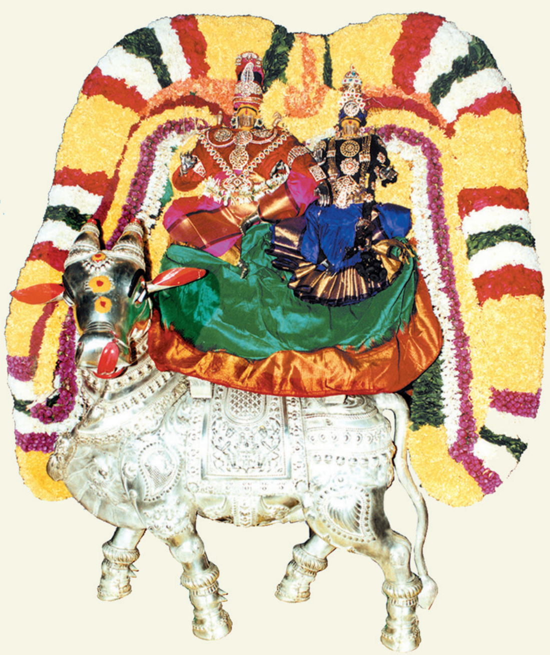

29-02-2024 गुरुवार
रात - मुषिकवाहन पर विनायक स्वामी, अंकुरार्पण

01-03-2024 शुक्रवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - हंसवाहन

02-03-2024 शनिवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

03-03-2024 रविवार
दिन - भूतवाहन
रात - सिंहवाहन

04-03-2024 सोमवार
दिन - मकरवाहन
रात - शेषवाहन

05-03-2024 मंगलवार
दिन - अधिकारनंदिवाहन
रात - तिरुच्चि उत्सव

06-03-2024 बुधवार
दिन - व्याघ्रवाहन
रात - गजवाहन

07-03-2024 गुरुवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - तिरुच्चि उत्सव

08-03-2024 शुक्रवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - नंदिवाहन
(महाशिवरात्रि)

09-03-2024 शनिवार
दिन - पुरुषामृगवाहन
रात - (कल्याणोत्सव) अश्ववाहन

10-03-2024 रविवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन में नटराजस्वामी, त्रिशूलस्नान
रात - ध्वजावरोहण, रावणासुरवाहन

शिवरात्रि की गरिमा

- डॉ.के.सुधाकर राव

हर साल फाल्गुण मास में शिवरात्रि पर्व पूरे देश में मनाया जाता है। कश्मीर में शिवरात्रि को हररात्रि कहते हैं।

स्कंदपुराण, लिंगपुराण, पद्मपुराण जैसे अनेक पुराणों में शिवरात्रि की महिमा का वर्णन देखने को मिलता है। महाशिवरात्रि के दिन शिव तांडव करते हैं। प्राचीन कथाओं के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन ही पार्वती-परमेश्वर का विवाह संपन्न हुआ था। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन ही क्षीरसागर का मंथन किया था देवताओं एवं असुरों ने। जिसके फलस्वरूप भयंकर हालाहल उत्पन्न हुआ। सारे लोगों को बचाने के लिए उस तीव्रतम विष को शिवजी ने पीलिया। अपने कंठ में ही उसे स्थगित कर दिया। तब से भगवान शिव ''नीलकंठ'' कहलाने लगे। उत्तराखंड में नीलकंठ महादेव मंदिर विराजमान है। कहते है कि भगवान भोलेनाथ ने प्रचंड विष का पान यही पर किया था।

इस बार महाशिवरात्रि पर्व मार्च 2024 में 8 तारीख को पूरे देश भर में धूम-धाम से मनाया जायेगा। महाशिवरात्रि के दिन उपवास रहकर बिल्वपत्रों से जो भी शिव की अर्चना करेगा उसके सारे मनोरथ सफल हो जायेंगे। इस में कोई संदेह नहीं है।

शिवरात्रि के दिन प्रदोष वेला में यानी सायं जो भी शिव का अभिषेक, बिल्वार्चन पूजा-पाठ करेगा। उसका कल्याण हो जायेगा।

अन्य देवताओं के लिए बहुत कुछ पूजन, अलंकार करना पड़ता है। लेकिन मात्र जल चढ़ाने से प्रसन्न होने वाले देव महादेव ही है। निम्नश्लोक इसी सत्य को उजागर करता है।

नमस्कारप्रियो भानु रभिषेकप्रियः शिवः।
अलंकार प्रियो विष्णुः ब्राह्मणो भोजनप्रियः।।

सूर्य सिर्फ नमस्कार करने से प्रसन्न होता है। विष्णु अलंकार करने से प्रसन्न हो जाता है। शिव अभिषेक

करने से प्रसन्न हो जाता है। ब्राह्मण भोजन प्रदान करने से संतुष्ट हो जाता है।

अतः पानी से या दूध मिश्रित पानी से, पंचामृत से शिवरात्रि के दिन अभिषेक करने पर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। हमारे सारे उपद्रवों का नाश करते हैं। मनोरथों की आपूर्ति करते हैं। इस विषय में किसी भी प्रकार का संशय नहीं।

हमारे देश के प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग क्षेत्रों में विशेष पूजा-पाठ, उत्सवों का आयोजन होता है। श्रीशैल क्षेत्र आंध्रप्रदेश में विख्यात है। इस मंदिर के शिखर के दर्शन मात्र से पुनर्जन्म से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं।

'श्रीशैल शिखरं दृष्ट्वा पुनर्जन्म न विद्यते' का मतलब यही है।

पंचाराम क्षेत्रों में विशेष शिवपूजा कार्यक्रमों का आयोजन होता है। अमरावती में अमरारामं, भीमवरं में सोमारामं, द्राक्षारामं, सामर्लकोटा में कुमारारामं, पालकोल्लु में क्षीररामं मशहूर पंचाराम क्षेत्र हैं। यहाँ पर रुद्राष्टाध्यायी मंत्रों से अभिषेक इत्यादि धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन शिवरात्रि के अवसर पर होता ही है। लोग बड़ी संख्या में विभिन्न उत्सवों में भाग लेने के माध्यम से शिवजी की कृपा को प्राप्त करते है।

तमिलनाडु में वैद्येश्वरन् कोयिल(मंदिर), तिरुवण्णामलै मन्दिर बहुत प्रसिद्ध हैं। तिरुवण्णामलै में अष्ट दिक्पालकों से प्रतिष्ठित लिंगों का दर्शन करने से पूर्वजन्म के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। तिरुवण्णामलै में गिरि(पर्वत) परिक्रमा करने से भगवान् आशुतोष अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। तिरुवण्णामलै क्षेत्र में नित्य शिवजी का पुष्पों से अलंकार किया जाता है। शिवरात्रि के अवसर तिरुवण्णामलै में विराजमान शिव अरुणाचलेश्वर भक्तों के सारे मनोरथों को सफल बनाते हैं।

प्राचीन पौराणिक कथा के अनुसार एक बार विष्णु और चतुर्मुख ब्रह्म के बीच कलह उत्पन्न हुआ। दोनों में कौन महत्वपूर्ण है? यह सवाल एक विवाद के रूप में परिवर्तित हुआ। तब दोनों को अहंकार नाश का पाठ पढ़ाने के लिए शिवजी ने अपने आप को एक अग्निमय स्तंभ के रूप में प्रकट कर दिया। विष्णु ने वराह पर बैठ कर उस अग्नि लिंग का अंत देखने पाताल तक पहुँचा। लेकिन उनको कुछ पता ही नहीं चला। उधर ब्रह्म ने हंस वाहन पर बैठ कर ऊर्ध्वलोकों में उस अग्नि लिंग का आदि (प्रारंभ) पता करने में निमग्न हुआ। लेकिन अंतरिक्ष, स्वर्ग और भी ऊर्ध्वलोकों का दौरा करने पर भी चतुर्मुख ब्रह्म को अग्नि लिंग का प्रारंभ कहाँ तक है? इस बात का पता नहीं लगा। दोनों बहुत थक चुके थे। तब ब्रह्म, विष्णु दोनों ने अपना अहंकार को त्यागकर महेश्वर का अंतरंग में स्मरण किया। तब महेश्वर प्रकट हुए। उन्होंने बोला- ''हे विष्णु! तुम सृष्टि का पालन-पोषण करते हो! हे ब्रह्मा! तुम सृष्टि की रचना करते हो। इतना अहंकार उचित नहीं है।'' तब दोनों ने महेश्वर की खूब स्तुति की। तब शिव ने अपने विराट अग्नि लिंग को उपसंहृत कर दिया। तमिलनाडु के नल्लूर में कल्याण सुन्दरेश्वर मंदिर मशहूर है। शादी में अगर रुकावटें आरही हैं तो इस सुंदरेश्वर का दर्शन करने से विवाह संपन्न होता है। अतुल्य नंदीश्वरर मंदिर भी शिवजी की महिमा के लिए विख्यात है। उज्ञयिनी के महाकालेश्वर मध्यप्रदेश में विख्यात है। महाकालेश्वर के दर्शन करने से अकालमृत्यु नष्ट हो जाता है।

चिदंबरं, ॐकारेश्वर, सोमनाथ, त्र्यम्बकेश्वर जैसे क्षेत्रों में शिवजी विराजमान है। काशी में विश्वनाथजी का दर्शन करने मात्र से सभी मनोरथ सफल हो जाते हैं।

आंध्रप्रदेश के श्रीकालहस्ती में शिवजी वायुलिंग के रूप में विराजमान है। उत्ताराखंड में केदारनाथ प्रसिद्ध है। यहाँ पर लिंग त्रिकोणाकार में विराजमान है। पौराणिक कथा के मुताबिक पांडवों ने केदारनाथ लिंग की अर्चना की थी।

इस प्रकार भारत में शिव मंदिरों की कभी नहीं है। नेपाल में पशुपतिनाथ मंदिर प्रसिद्ध है। महाशिवरात्रि के दिन आप अपनी सुविधानुसार किसी भी क्षेत्र में जाकर भगवान महादेव का दर्शन कर सकते हैं। अगर किसी कारण से यात्रा नहीं कर पातें, तो कोई

बात नहीं। घर में शिवलिंग का अभिषेक करें। बिल्व पत्रों से पूजा करें। शिवस्तोत्रों का पाठ करें। हो सके तो गुरु से मंत्र प्राप्त कर शिवपंचाक्षरी का जाप कर सकते हैं। रुद्राक्षमाला का प्रयोग करना उचित होगा।

स्वास्थ्य की समस्या के समाधान के लिए लघु मृत्युंजय (ॐ जूं सः) मंत्र का जाप करें। महामृत्युंजय मंत्र का भी जाप सारे अरिष्टों का नाश करने में समर्थ है। इस बार मार्च 2024, 8वाँ तारीख को महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में शिव को प्रसन्न करें।

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तृतीय आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

3. आसन (अठारह प्रकार) :

"हे पद्माक्षी! सुनो! चौरासी लाख आसनों में अतिमुख्य आसन सिर्फ चौरासी हैं। उन में भी अठारह अतिमुख्य हैं। उन अठारह अतिमुख्य आसनों में मुख्य आसन सिद्धासन, भद्रासन, पद्मासन, सिंहासन हैं। फिर इन चार आसनों में सिर्फ सिद्धासन ही सर्वाधिक प्रमुख है। हे पोलति! अष्टादश आसनों के बारे में अलग अलग से बताऊंगा। सनो! स्वस्तिकासन, गोमुखासन, वीरासन, कूर्मासन, कुक्कुटासन, उत्तान कूर्मासन, धनुरासन, मत्स्येंद्रासन, पश्चिमोत्तानासन, मयूरासन, सिद्धासन, मतांतर सिद्धासन, भद्रासन, पद्मासन, मतांतर पद्मासन, बद्ध पद्मासन, सिंहासन, शवासन ये अठारह मुख्य आसन है।

1. स्वस्तिकासन :

"हे तरुणि! सुनो! जानु और जांघ के अंतर में शरीर को एक ओर झुकाकर सुरक्षित करके बैठना ही स्वस्तिकासन है। हे पद्माक्षी! गोमुख आसन के बारे में सुनो!

2. गोमुख आसन :

दाएँ पैर की एडी को बाएँ पीठ के बगल में, बाएँ पैर की एडी को दाएँ पीठ के बगल में घुटनों पर घुटने डाल कर बैठना ही गोमुखासन है।

3. वीरासन :

एक पाद जांघ के नीचे, एक पाद जांघ पर रखकर बैठने से वह वीरासन है।

4. कूर्मासन :

आधार में दोनों पार्शों में दोनों पैरों की एडियों को स्पर्श करते अच्छी तरह बैठने को कूर्मासन है।

5. कुक्कुटासन :

पद्मासन में बैठ कर घुटनों एवं जांघों के बीच में हाथों को घुसाकर दोनों हाथों को धरती पर लगाकर पद्मासन को ऊपर उठाने की तरह बैठना कुक्कुटासन है।

6. उत्तान कूर्मासन :

कुक्कुटासन पर बैठ कर दोनों हाथों से गले को पकड कर कूर्म की तरह पीठ के बल से पडे रहने को उत्तान कूर्मासन कहा जाता है।

7. धनुरासन :

पैर को दोनों अंगुष्टों को दोनों हाथों से धनुराकृति में पीठ के पीछे कानों के साथ पकडना धनुरासन है।

8. मत्स्येंद्रासन :

बाएँ जांघ पर पहले दाएँ पैर को मोड कर, घुटनों के बाहर बाएँ हाथ को फिरोकर दाएँ पैर को पकड कर बैठने से वह मत्स्येंद्रासन है। इससे जठराग्नि प्रकाशवान होकर, कुक्षीरोग दूर हो जाते हैं। इस के अभ्यास से कुंडली जागृत होती है। पुरुष को दंडस्थिरत्व भी प्राप्त होता है।

9. पश्चिमोत्तासन (पश्चिम स्थाण्वासन)

धरती को छूते हुए दोनों पैर अच्छी तरह लंबा करके, कमर को मोड कर घुटनों पर ललाट रखकर, दोनों हाथ दोनों पैरों के अंगुष्टों को दोनों हाथों से पकडने पर वह पश्चिमोत्तासन है। इससे वायु पश्चिम मार्ग से चलेगी। जठराग्नि पैदा होकर, पेट साफ होकर रोग सब दूर हो जाते हैं। इस का दूसरा नाम पश्चिम स्थाण्वासन है।

10. मयूरासन :

दोनों हाथों को धरती पर रखकर, दोनों कोहनियों को नाभि के दोनों ओर रखकर, मुख ऊपर उठाकर, दोनों पैरों को लंबा करके मोर की पूंछ की तरह ऊपर उठाकर रखना ही मयूरासन है। इससे उदर गुल्मादि रोग नष्ट होकर, जठराग्नि प्रकाशवान बन कर विष को भी पचने की ताकत आयेगी।

11. सिद्धासन :

बाएँ पैर की एडी मूलाधार के पास, दाएँ पैर की एडी को लिंग स्थान के पास रखकर, एकाग्र चित्त से शिरोग्रीव भुजाओं को ठीक से रखकर, कमर को ऊपर की तरह रखकर भ्रूम मध्यालोकन करते रहने से वह सिद्धासन है। इससे मोक्ष द्वार का कवाट खुलेगा।

12. मतांतर सिद्धासन :

लिंग स्थान के ऊपर बाएँ एडी को रखकर, उस के ऊपर दाएँ एडी को रखने से वह मतांतर सिद्धासन है। यही वज्रासन है। यही मुक्तासन है। यही गुप्तासन भी है।

13. भद्रासन :

दोनों एडियों को संधान प्रदेश में लिंग के पार्श्व भाग में रख कर दोनों पैरों के पार्श्व भागों को दोनों हाथों से पकड कर बिना हिले बैठने से वह भद्रासन है। इससे विष और समस्त रोग दूर हो जाएँगे। यही गोरक्षासन भी है।

14. पद्मासन :

बाएँ जांघ पर दाएँ पाद, दाएँ जांघ पर बाएँ पाद रखकर रीढ के साथ दाएँ हाथ से बाएँ जांघ पर रहनेवाले दाएँ पाद के अंगूठे को पकड कर, उसी प्रकार रीढ के साथ बाएँ हाथ से दाएँ जांघ पर रहनेवाले बाएँ पाद के अंगूठे को पकड़ कर चुबुक और नासिकाग्र को देखने की मुद्रा में बैठना पद्मासन है। इस से सारे रोगों का निवारण होता है।

15. मतांतर पद्मासन :

बाएँ जांघ पर दाएँ पाद उल्टा रखकर दाएँ जांघ के बीच में बाएँ पाद उल्टा रखकर दोनों हाथ दोनों जांघों पर उल्टे रख कर, नासाग्र पर लक्ष्य केंद्रित करके दांतों के मूल में जीभ से स्पर्श करके, वक्ष पर चुबुक को रखकर, धीरे धीरे वायु को बंद करना ही मतांतर पद्मासन है। इस से सर्वरोगों का निवारण होता है। यही मुक्त पद्मासन भी है।

16. बद्ध पद्मासन :

दोनों हाथों को स्पर्श करके पद्मासन में बैठ कर, चुबुक को वक्ष पर स्पर्श करके, चित्त में ध्यान करते हुए

अपान वायु को ऊर्ध्व मुखी चालन करने से, कुंडलिनी शक्तियुक्त होने पर प्राण वायु को छोडना बद्ध पद्मासन है। इस से अतिशय ज्ञानबोध होता है। इससे नाडी द्वार के द्वारा वायु रुखेगी। इस प्रकार के आसन से मृत्यु बच सकते हैं।

17. सिंहासन :

लिंग के दोनों पार्श्वों में बाएँ पैर की एडी को दक्षिण पार्श्व में दाएँ एडी को, बाएँ पार्श्व में रखकर, हाथों को दोनों घुटनों के ऊपर से लंबा करके, विकसित अंगूठों को (मुँह खोले बिना नासिकाग्र पर लक्ष्य लगा कर) रखना सिंहासन है।

इस के द्वारा मूलोड्यान जलंधर बंधत्रयानुसंधान प्राप्त होगा। यही अत्यंत श्रेष्ठसिंहासन है।

18. शवासन :

धरती पर पीठ के बल पर सोकर, दोनों पैर दोनों अंगूठों को एक साथ रखकर लंबा करके, दोनों हाथ वक्ष के दोनों तरफ रखकर सोना ही शवासन है।

इससे समस्त शरीर के सारे अंग थकान से मुक्त होते हैं। यह चित्त विश्रांत करने का आसन भी है।

इस प्रकार विविध आसनों को करने से नाडियाँ वश में आकर देह को जवत्व और लघुत्व प्राप्त होकर सर्व रोगों से शरीर मुक्त हो जाता है।

इस पर विजय प्राप्त करने के बाद प्राणायाम करना चाहिए।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्रीनिवासमंगापुरम्

श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2024 फरवरी 29 से मार्च 08 तक

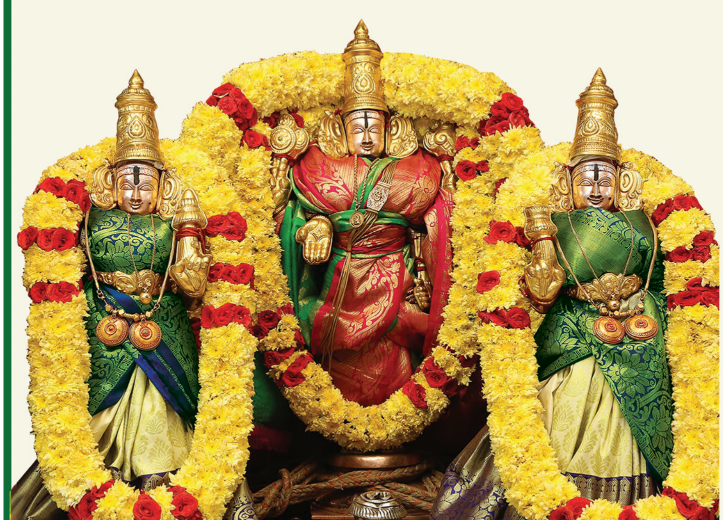

29-02-2024 गुरुवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

01-03-2024 शुक्रवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

02-03-2024 शनिवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

03-03-2024 रविवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

04-03-2024 सोमवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुडवाहन

05-03-2024 मंगलवार
दिन - हनुमन्तवाहन
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

06-03-2024 बुधवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

07-03-2024 गुरुवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

08-03-2024 शुक्रवार
दिन - पालकी उत्सव, तिरुच्चि उत्सव, अवभृथोत्सव, चक्रस्नान
रात - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

होली

- कुमारी एम:रोहिणी

होली वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक भारतीय त्योहार है। यह त्योहार फाल्गुण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस त्योहार को मनाने का कारण क्या हैं - इसके पीछे कई कथाएँ प्रचलित हैं। कुछ लोगों के अनुसार इस समय फसल कटकर तैयार होती हैं, तो कृषकों के लिए यह खुशी का आनंदोत्सव होता हैं। दूसरी तरफ कुछ लोग इसे प्रह्लाद और हिरण्यकशिपु की कथा से जोड़ते हैं। कुछ लोग इसे राधा-कृष्ण के रास-लीला और कामदेव के पुनर्जन्म से भी जोड़ती हैं। और इस वजह से साहित्य के क्षेत्र में भी साहित्यकार इसे वसंतोत्सव के रूप में प्रमुख स्थान दिए हैं। इसके

अतिरिक्त किंवदंतियों के रूप में यह भी सुना जाता है कि इसी दिन बाल-कृष्ण ने पूतना राक्षसी का वध किया था।

इन कथाओं में सबसे प्रसिद्ध प्रह्लाद की कथा हैं। ऐसा माना जाता है कि प्राचीन काल में हिरण्यकशिपु नामक एक अत्यंत बलशाली राजा था। उन्होंने ब्रह्मदेव से ऐसा वरदान प्राप्त किया था कि उनकी मृत्यु कहीं भी न हो - न आकाश, न धरती, न दिन में, न रात में। इस वरदान के कारण स्वयं को अमर (जिसकी मृत्यु न हो सके) मानने लगा था। इस अहंकार में स्वयं को ईश्वर मान कर अपने राज्य में उन्होंने स्वयं को ईश्वर घोषित कर दिया और किसी अन्य नाम लेने पर पाबंदी लगा दिया) और परिस्थिति ऐसी उत्पन्न हुई कि उसका पुत्र प्रह्लाद - विष्णु-भक्त था। इससे क्रुद्ध होकर वह प्रह्लाद को कठोर से कठोर दंड दिया, परन्तु उसके भक्ति का मार्ग न छोड़ा।

इसी संदर्भ में अपने पुत्र को दंड देने के लिए उसने अपनी बहन होलिका को बुलाया। होलिका को ऐसा वरदान प्राप्त था कि वह अग्नि में भस्म नहीं हो सकती हैं। इसी कारण होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि की चिता पर बैठे गई।

इससे होलिका ही जल गई और प्रह्लाद अपनी भक्ति के कारण जीवित निकल आया। इस वजह से ऐसा माना जाता है कि होलिका दहन किए बिना होली नहीं मनाया जा सकता हैं। इसलिए आज भी

यह दो दिनों का पर्व पहले होलिका दहन से ही आरंभ होता हैं।

पहले दिन रात्रि के समय गाँव के सारे जनसमुदाय मिलकर प्रत्येक घर से लकड़ियाँ एकत्रित करते हैं और एकांत स्थान में जाकर जलाते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से इसे, अपने अंदर की सारी नकारात्मक भावनाओं को निकालकर जलाना, के रूप में भी देखा जाता हैं।

फिर इसी दिन लोग रंगों से खेलते हैं। बच्चे-बूढ़े-प्रौढ़ स्त्री-पुरुष सभी पड़ोसियों-मित्रों-रिश्तेदारों से मिलने जाते हैं। इन लोगों का स्वागत रंग-गुलाल से किया जाता हैं। इस अवसर पर लोग अपने ईष्या-द्वेष भूलकर प्रेमपूर्वक गले मिलते हैं और फिर स्नान करके नए-नए कपड़े पहनकर लोग प्रीति-भोज, गीत-संगीत जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

उत्तर भारत में इस दिन पुआ-नामक एक विशेष व्यंजन बनाया जाता हैं। इसके अतिरिक्त भी नए फसलों के आगमन की खुशी में कई स्वादिष्ट व्यंजन बनते हैं।

निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि यह पर्व बुराईयों पर अच्छाईयों का प्रतीक हैं। होलिका दहन समाज की बुराईयों, गंदी मानसिकता, ईष्या-द्वेष इत्यादि भावनाओं के अंत का प्रतीक हैं। और जीवन में अद्वितीय उत्साह जगाने वाला त्योहार हैं।

बशर्ते आज लोग अप्राकृतिक नुकसान पहुँचाने वाले रंगों का प्रयोग करते हैं, जो इस पर्व की कुछ बुराईयों में हैं। परन्तु इसे लोगों की मानसिकता को बदलकर सुधार की जा सकता हैं।

उत्साह और हर्षोल्लास से भरा यह त्योहार।

आओं मिलकर करे हम दुर्भावनाओं का परिहार।।

❁ ❁ ❁

अप्रैल 2024

05-13 तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

06 अन्नमय्या वर्धंति

09 ‘श्री क्रोधिनाम’ तेलुगु नूतन वर्ष ‘उगादि’

11 श्री मत्स्यजयंती

14 डॉ.बी.आर.अंबेडकर जयंती

12-20 वायल्पाडु श्री पट्टाभिरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

17-25 ओंटिमिट्टा श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

17 श्रीरामनवमी

21-23 तिरुमल श्री बालाजी का वसंतोत्सव

23 अप्रैल से 01 मई तक नागुलापुरम् श्री वेदनारायणस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यह्लनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

तिरुमलराय मंटप

रंगमंटप के पश्चिमी पक्ष में तिरुमलराय मंटप है। यह बडा मंटप है और ध्वजस्तंभ की उत्तरी दिशा में है। यह कुछ ऊँचे मंच पर, सीढियों सहित स्थित है। यहाँ कुछ उत्सवमूर्तियाँ 'आस्थानम् उत्सव' के समय रखी जाती हैं।

सालुव नरसिंह ने सन् 1473 में डोला-महोत्सव-अन्न-ऊँजल-तिरुनाल (डोलोत्सव) का आरंभ कराया था। इसे 'ऊँजलि सेवा' कहते हैं। पहले यह उत्सव मिथुन मास (आणि मास) में मनाया जाता था। इन उत्सवों के समय में (जून-जुलाई) भगवान को प्रसाद आदि को अर्पित करने के लिए सालुव नरसिंह ने अपनी माता के नाम पर 'मल्लायम्मन-संधि' की योजना बनायी थी। चित्तिरै उत्सव के लिए (अप्रैल में) सात दिवसीय पूजादि के लिए भी उन्होंने चावल आदि की व्यवस्था की थी। आणि मास में बीस दिन पर्यन्त चलनेवाले ''कोडै तिरुनाल उत्सव'' और संक्रमण-उत्सव (मकर संक्रांति पर्व के समय) के लिए भी उन्हीं के समय में व्यवस्थाएँ की गयी थीं। स्वामिपुष्करिणी के तट पर स्थित ''तीर्थवारी मंटप'' को भी परंपरित मंदिर पुरोहितों से उन्होंने खरीदा है। वहाँ की आवश्यक व्यवस्थाएँ भी उन्होंने की हैं। नौ दिन पर्यन्त चलनेवाले श्री स्वामी ब्रह्मोत्सवों के लिए भी उन्होंने 'दोम्मरपट्टी' गाँव को दान में दिया था। यह पडैवीडु राज्य के अधीन था (ति.ति.दे. लेख खंड II, क्र.सं.50)।

दोम्मरपट्टी गाँव से मिलनेवाली आमदनी ''अन्नाऊँजल'' उत्सव के लिए और प्रसादों के निर्वहण के लिए काफी मानी गयी है। इससे संबन्धित इतना ही विवरण प्राप्त है।

शायद यह सब तिरुमलराय मंटप में मनाये जानेवाले उत्सव ही हो सकता हैं। नंदन नाम संवत्सर (शक. 1394) के 'उत्थान द्वादशी' (कार्तिक शुक्ल एकादशी) के दिन 'दुर्ग समुद्रम्' गाँव को श्री वेंकटेश्वर और श्री गोविंदराज स्वामी के मंदिरों के निर्माण के लिए दान में दिया गया था। (वाल्यूम II, क्र .सं. 79)। यह समय 13 अक्तूबर, 1472 है। शायद इस अनुदान से ही मंदिर के अधिकारियों ने उस समय शिखर (गोपुर) का निर्माण हाथ में लिया। समानांतर में तिरुमल पर नरसिंहराय मंटप का भी निर्माण राजा के इच्छानुसार हुआ होगा। इस पर एक शिलालेख मिलता है।

वह 30 मई 1482 का है। इसमें स्पष्ट है कि उक्त गाँव को कार्य निर्वाहक विभाग (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट) को दखल किया जाय। विभाग को अनुदान मिला और आवश्यक निर्माण कार्य और पुनरुद्धार कार्य भी संपन्न किये गये हैं। (खंड II, क्र.सं. 79)।

'दुर्गसमुद्रम्' का दान दिनांक 13 अक्तूबर 1472 को हुआ और ''डोला महोत्सवम्'' (अन्नऊँजल तिरुणाल) जून 1473 में मनाया गया है। क्र.सं. 79 से प्राप्त सूचना के अनुसार पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट ने निर्माण कार्य अनुदान प्राप्ति के तुरंत बाद ही आरंभ किया तथा नरसिंहराय मंटप का आंशिक निर्माण ही हुआ होगा जब ''ऊँजल उत्सव'' (डोलोत्सव) मनाया गया। सालुव नरसिंह राय ने इस असंपूर्ण या आधा भाग बनाये मंटप में ही उत्सव में भाग लिया होगा। पूरा निर्माण मई, 1482 में हुआ होगा।

समय के साथ साथ नरसिंह राय मंटप उत्सवों के निर्वाह के लिए जगह की दृष्टि से कम पडा हो और उसका पुनरुद्धार आवश्यक समझा गया हो। इसीलिए उस मंटप का पुनरुद्धार और विस्तरीकरण कार्य संपन्न हुए थे। यह आरवीडु राजवंश के तिरुमलराय के हाथों हुआ था। (खंड V, क्र.सं. 168) यह 15 दिसंबर, 1561 में लिखित लेख से प्राप्त समाचार है। उन्हीं के समय में ''चंपक चुरु'' (संपंगि प्राकार) में ऊँजल-मंटप का निर्माण किया गया था। भगवान के लिए ''अतिरस पडि'' नैवेद्य का समर्पण भी हुआ था। यह श्री वेंकटेश्वर भगवान के चौदह दिवसीय ब्रह्मोत्सवों के समय उत्सवमूर्तियों को हुआ। इसी प्रकार पाँच-दिवसीय ऊँजल उत्सवों के समय में भी किया गया था। यह सब सालुव नरसिंहराय के हाथों ही हुआ था। पाँच-दिवसीय ''पवित्रोत्सव'' का आरंभ सालुव मल्लयदेव से जनवरी 1564 में किया गया मालूम होता है। पाँच-दिवसीय वसंतोत्सव का आरंभ तिरुमल राय ने किया था (खंड V, पृ. 93)। यह समय जून 1547 था। उस समय तिरुमल पर अनेक उत्सवों की परिकल्पना भी की गयी थी। इस तरह कुल मिलाकर 25 उत्सव (10 ब्रह्मोत्सव सहित) मनाये जाते थे। इनके अलावा साल के 241 पवित्र दिन भी माने जाते थे। विशेष उत्सव मनाये जाते थे। ये सब तिरुमल राय मंटप में ही संपन्न होते हैं। पुनरुद्धरित या पुनर्निर्मित सालुव नरसिंह के ''ऊँजल-मंटप'' का कुछ परिवर्तन अवश्य हुआ दिखाई देता है।

सालुव नरसिंह ने ''तिरुक्कोनेरु'' (पवित्र स्वामिपुष्करिणी) के पास ही ''वसंत-मंटप'' का निर्माण भी कराया। उन्होंने ही स्वामिपुष्करिणी में ''तेप्पोत्सवम्'' (तिरुपल्लिओड तिरुणाल) का भी आरंभ कराया था। भगवान एक सुंदर रूप से निर्मित नाव में देवेरियों के साथ विहार करते हैं। यही ''तेप्पोत्सवम्-प्लवोत्सव'' नाम से प्रसिद्ध भी है। उन्होंने दस दिन का ''कोडै तिरुनाल'' उत्सव का भी इंतजाम किया था। उस समय प्रसाद का वितरण वसंत मंटप में संपन्न होता था (खंड II, क्र.सं. 31)। मूलमूर्ति के साथ-साथ उत्सवमूर्तियों के लिए भोग तथा 10 दिन पर्यन्त चलनेवाले ''अध्ययनोत्सवम्'' के लिए ''तनिकैनाडु'' (आजकल के तिरुत्तणि) प्रान्त का 'आगरम् मुरुक्कमपट्टु' गाँव दान में दिया गया था। ''अर्द्धोदय'' (दिनांक 28-12-1467) के दिन पर और मकर संक्रांति के अवसर पर संपन्न किया गया। इससे संबन्धित रिजस्ट्रेषन

कार्य सर्वजित संवत्सर के मीन मास में संपन्न हुआ। यह शक संवत्सर 1389 में यानी 16, मार्च, 1468 में घटित हुआ था।

कहा जाता है कि सालुव नरसिंह ने 'संपंगि प्राकार' के चारों कोनों में चार-खंभों के चार मंटपों का निर्माण किया था और ''तीर्थवारि मंटप'' को मंदिर के परंपरित पुजारी वर्ग से खरीदा था। सभी संदर्भों में पूजादि कार्यक्रमों के निर्वहण के लिए आवश्यक व्यवस्थाएँ भी की। उदाहरण के लिए उस समय में संपन्न होनेवाले एकाधिक ब्रह्मोत्सव, तिरुप्पलि ओडम (नौका विहार उत्सव) आदि। ये उत्सव सालुव नरसिंह और उनके पुत्र कुमार नरसय्यन्, चिक्क संगमन् तथा पेरिय संगमन् के नामों पर चलते थे। हर मंटप के पास एक ''अप्पपडि'' (प्रसाद का माप) निवेदित होता था (खंड II, क्र.सं. 51, अनुसंधायक क्र.सं. 50)। क्र.सं. 51 के अनुसार यह भी विदित होता है कि उन्होंने पवित्र पुष्करिणी के पास एक 'नंदनवनम्' का निर्वाह किया था एवं एक और 'नंदनवनम्' (बगीचा) 'नरसिंग राय कोनेरु' के पास (कोनेरु = सरोवर)। एक धर्मशाला का भी निर्माण सरोवर तट पर किया जिस में ''पुरुट्टासि ब्रह्मोत्सवम्'' के समय 10 दिन पर्यन्त भक्तों को अन्नदान की व्यवस्था भी उनके समय में होती थी।

उनके समय में जो ''नरसिंहराय कोनेरु'' था वही आगे चलकर ''अच्युतराय कोनेरु'' कहलाने लगा। उसी के पास 19वीं सदी में एक नारियल का बगीचा भी लगाया गया था। इसी जगह पर देवस्थानम् की ओर से आजकल अतिथिगृह बने हैं।

खंड II, क्र.सं. 79 के अनुसार उसी समय में दो बाह्य शिखरों का भी निर्माण किया गया और पैदल चढनेवाले रास्ते में हर 100 गज की दूरी पर कुछ गोपुर भी निर्मित किये गये हैं।

सहस्र खंभों का मंटप

खंड II, क्र.सं. 18 लेख सभानु (स्वभानु) नामक संवत्सर के मकर मास (शक संवत्सर 1385 = 18, जनवरी 1464) में सालुव मल्लदेव महाराजा से संबन्धित मिलता है। उसके अनुसार सालुव एर्रकम्पदेव महाराजा के पुत्र सालुव मल्लदेव महाराजा ने श्री वेंकटेश्वर भगवान की मूलविराट मूर्ति को प्रतिदिन नैवेद्य (पायसम् या खीर सहित) की व्यवस्था की थी। इतना ही नहीं मलयप्पस्वामी की उत्सवमूर्तियों (मलैकिनिय निन्र पेरुमाल तथा उनकी दो नाच्चियार श्रीदेवी तथा भूदेवी सहित) के लिए तिरुक्कार्तिकै (कार्तिक नक्षत्र) के समय संपन्न होनेवाले 7 ब्रह्मोत्सवों के समय प्रसाद आदि के वितरण की व्यवस्था भी की थी। उत्सवमूर्तियों में श्री वेंकटेश्वर और उनकी देवेरियाँ श्रीदेवी और भूदेवी की मूर्तियाँ हैं। वे मूर्तियाँ हर ब्रह्मोत्सव के समय तीसरे, चौथे, पाँचवें तथा सातवें दिनों में शोभायात्रा में भाग लेती हैं। पवित्रोत्सव के पांचों दिनों में भी इसी प्रकार चलता है। पवित्रोत्सव आवणी महीने में (श्रावण मास, - आगस्त - सितंबर) धार्मिक अनुष्ठानों के साथ चलता है। इस क्रम में बीज वपन, प्राँगण का अलंकरण, वेदमंत्र पाठ, पुराण श्रवण, मंदिर की चारों ओर शोभायात्राएँ, आदर-सत्कार

जनवरी-2024 महीने का क्विज-18 के समाधान

1) जनवरी, 2) तोंडमान, 3) अगस्त्याश्रम,

4) प्रभु श्रीराम, 5) श्री वेंकटेश्वरस्वामी/बालाजी,

6) रेणुका, 7) जमदग्नि, 8) परशुराम,

9) पुण्यकोटि विमान,

10) कोमलवल्लि नाच्चियार,

11) वेदसार विमान, 12) देवहूति,

13) स्वयंभु मनु और शतरूपा,

14) भोगी, 15) Piper Nigrum.

आदि संपन्न होते हैं। इस का व्यय पूरने के उद्देश्य से चंद्रगिरि राज्य का 'एलंबाक्कम्' गाँव को दान में दिया गया।

सालुव मल्लयदेव द्वारा निर्मित मंटप ही सहस्र-खंभों का मंटप है। यह भगवान के मंदिर के सामने है। मंदिर की पूर्व वीथि या सन्निधि वीथि में यह है। इस मंटप में एक हजार खंभे हैं। (आज इस मंटप को हटाया गया है। यात्रियों के आवागमन की सुविधा को दृष्टि में रखकर निकाल दिया गया है।)

श्री वेंकटेश्वर भगवान के मंदिर में अनेक उत्सवों की परिकल्पना समय समय पर राजाओं के द्वारा की गयी है। कुछ विशिष्ट व्यक्ति और आध्यात्मिक वेत्ता और सामंत राजाओं द्वारा भी इस प्रकार की योजनाएँ तिरुमल मंदिर के साथ बनी है। कहना चाहिए कि वर्ष के 365 दिन यहाँ उत्सव के दिन ही हैं। खंड V, क्र.सं. 168 से इस संबन्ध में कुछ सूचनाएँ मिलती हैं। आरवीडि तिरुमाल के समय प्रचलित कुछ उत्सव इस प्रकार हैं- 15 दिसंबर 1561 में प्राप्त सूचना के अनुसार ''अतिरस-पडि'' 491 दिनों के लिए निवेदित हुआ था। इसमें 140 दिनों में संपन्न 10 ब्रह्मोत्सव, 110 दिनों के नित्योत्सव, 241 दिनों के उत्सव हुए। 241 दिनों के उत्सवों में 13 अमावास्या के दिन, 13 पूर्णिमा के दिन, 25 एकादशियाँ, विशिष्ट नक्षत्रों के दिन - रोहिणी, पुनर्वसु के 13 दिन आदि हैं। ये सब, कुल मिलाकर 439 उत्सव होते हैं। (इस सूचना में कुछ अतिशयोक्ति संभव है।) बहु संख्या में भक्तगण इन उत्सवों में भाग लेते ही होंगे। 3000 फुट की ऊँचाई पर स्थित तिरुमल एक शीतल प्रांत है। आस-पास घने जंगल हैं। भारी वर्षाएँ भी होती रहती हैं।

इस मौसम के अडचनों को झेलने के लिए सब प्रकार के भक्तों और कर्मचारियों के लिए आवश्यक सुविधाएँ भी चाहिए। इसके लिए कुछ खुले मंटपों का निर्माण भी हुआ है, जिस में वर्षा और धूप से भक्त अपने को सुरक्षित रख सकते हैं। इस प्रकार के निर्माणों में भक्त, सामंत, रईस आदि ने हाथ बटाया है।

कुछ समय के बाद ऐसे कुछ स्थल और मंटप दूसरों के अधीन हो गये हैं। उन्होंने आवासों के रूप में कमरों और घरों का निर्माण कर लिया।

क्रमशः

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS ABOUT

SAPTHAGIRI

(MONTHLY)
FORM IV
See Rule 8

1. Place of Publication	:	TIRUPATI
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sri P. Ramaraju, M.A.
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	S.O.,T.T.D.Press Compound, K.T.Road, Tirupati.
4. Publisher's Name	:	**Dr. K. Radha Ramana**, M.A.,M.Phil., Ph.D.
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	Chief Editor Office, T.T.D.Press Compound, K.T.Road, Tirupati.
5. Editor's Name	:	**Dr. V.G.Chokkalingam**, M.A., Ph.D.
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	Chief Editor Office, T.T.D.Press Compound, K.T.Road, Tirupati.
6. Name and address of individuals who own the News paper and partners or share holders holding more than one percent of the Total Capital	}	Tirumala Tirupati Devasthanams

I, K. Radha Ramana, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

TIRUPATI
Date : 29-2-2024

(Sd.) Dr. K. Radha Ramana
Signature of the Publisher

लक्ष्मी जयंती

- डॉ. एच. एन. गौरीराव

माता लक्ष्मी धन-धान्य, शांति, शक्ति, भाग्य और समृद्धि प्रदान करनेवाली देवी मानी जाती है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार माता लक्ष्मीदेवी भगवान-विष्णु जी की पत्नी है। वे तीन प्रमुख देवियों में से एक है। माता लक्ष्मी क्षीर सागर से जिस दिन आविर्भूत हुई थी, उस दिन को 'लक्ष्मी जयंती' के रूप में उत्सव मनाया जाता है।

धार्मिक शास्त्रों के अनुसार फाल्गुण मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को माता लक्ष्मी का जन्म दिन माना जाता है। विश्वास किया जाता है कि जो व्यक्ति इस दिन भक्तिपूर्वक देवी लक्ष्मी की अर्चना करता है उसकी हर कामना पूर्ण होती है।

आइए, जानेंगे लक्ष्मी देवी की अवतरण की संपूर्ण कथा :

लक्ष्मीदेवी के अवतरण के बारे में जानकारी विष्णु पुराण, स्कंद पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों से प्राप्त होती है। यह कथा इस प्रकार चलती है -

प्राचीन काल में एक बार दूर्वास महर्षि देवलोक जा रहे थे। उस समय उनकी मुलाकात इंद्रदेव से होती है। दूर्वास महर्षि ने अपने गले से पुष्पमाला उतारकर भेंट के रूप में इंद्र को दिया; देवेंद्र ने अहंकारवश उस माला को ऐरावत के गले में डाला; ऐरावत ने उस पुष्प माला को अपने पैरों के नीचे रौंद दिया। इंद्र के इस कार्य को अपना अपमान समझकर क्रोधित दूर्वास महर्षि ने इंद्र को श्रीहीन होने का शाप दिया था। इस शाप के प्रभाव से इंद्र धनहीन तथा शक्तिहीन हो गये। इस अवसर का लाभ उठाते हुए दैत्यों के राजा बलि ने स्वर्ग पर आक्रमण करके देवताओं को हराके स्वर्ग को अपना अधीन कर लिया।

पराजित देवताओं ने भयभीत होकर ब्रह्मा जी को लेकर भगवान विष्णु से मिलकर अपनी करुणाजनक कथा सुनाकर दैत्यों से रक्षा करने की तथा स्वर्ग को वापस दिलाने की प्रार्थना की। भगवान विष्णु निराशाग्रस्त देवताओं को अभय देते हुए कहा- ''क्षीरसागर मंथन करने से जो अमृत निकलता है, उसे पीने से आप अमर हो जाते हैं तथा राक्षसों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। क्षीरसागर मंथन कार्य बहुत कठिन है, इससे राक्षसों की सहायता लेना।'' श्रीविष्णु की सलाह के अनुसार सब देवता दैत्य राजा बलि के पास जाकर अपने प्रस्ताव को उसके सामने रखा। उन्होंने राजा बलि को अमृत की लालसा दिखाया। राजा बलि भी अमृत को पाने की

आशा से अपना सहयोग देने के लिए तैयार हो गये। इस क्षीरसागर मंथन के लिए श्रीहरि ने कच्छप का रूप धारण किया। मथने केलिए उस पर मंदराचल पर्वत को स्थापित करके, वासुकी नाग को रस्सी बनाकर देवताओं और दानवों ने मिलकर समुद्र मंथन के शुभ कार्य को आरंभ किया। दैत्य एक ओर दानव एक ओर खड़े होकर समुद्र मंथन करने लगे। सबसे पहले क्षीरसागर से हालाहल निकला। उसको भगवान शिव ने पिया। इससे शिव नीलकंठ कहलाए। इसके बाद सागर मंथन से एक-एक करके अनेक श्रेष्ठ रत्न निकलने लगे। इस दौरान फाल्गुण शुक्ल पूर्णिमा के दिन महालक्ष्मी का अवतरण हुआ। माँ के दिव्य तेज को देखकर सब लोग आश्चर्यचकित हो गए। वे कमल के आसन पर आसीन थीं। उनके रोशनी की दिव्य कांति सब ओर प्रकाशित हो रही थी। उनके हाथ में कमल शोभायमान दिखती थी। उनका दर्शन कर सारे देवी-देवता और महर्षि गण प्रसन्न हो गए। देवेंद्र ने माता को एक उच्च सिंहासन पर बिठा दिया; ऋषि-मुनियों ने वैदिक श्रीसूक्त का पाठ किया। देवी-देवताओं ने माता की स्तुति की। विश्वकर्मा ने माता को गहने समर्पित किया; सागर ने पीले वस्त्र अर्पित किए। सकल श्रृंगार से युक्त महालक्ष्मी देदीप्यमान दिखाई दे रही थी। माता ने अपने हाथों से कमल की माला को वहां पर उपस्थित सर्वगुण संपन्न, सर्वश्रेष्ठ भगवान विष्णु के गले में डाला। उसी सुदिन को भगवान विष्णु तथा माँ लक्ष्मी का विवाह संपन्न हुआ। विवाह के पश्चात विष्णु की हृदयेश्वरी माता लक्ष्मी अपने पति समेत वैकुंठ में वास करते हुए लोक कल्याण करने लगी।

कोल्हापुर वासिनी महालक्ष्मी :

कोल्हापुर में माता महालक्ष्मी की उपस्थिति के बारे में पौराणिक कथा है। एक बार सप्तर्षियों में से एक भृगु महर्षि का आगमन वैकुंठ में होता है। तब महाविष्णु शयनमुद्रा में थे। महालक्ष्मी उनके चरण को दबाती थी। वे दोनों ऋषि के आगमन से अनभिज्ञ थे। इससे उन्होंने भृगु का अभिवादन नहीं किया। क्रोधित भृगु ने महर्षि भगवान विष्णु के

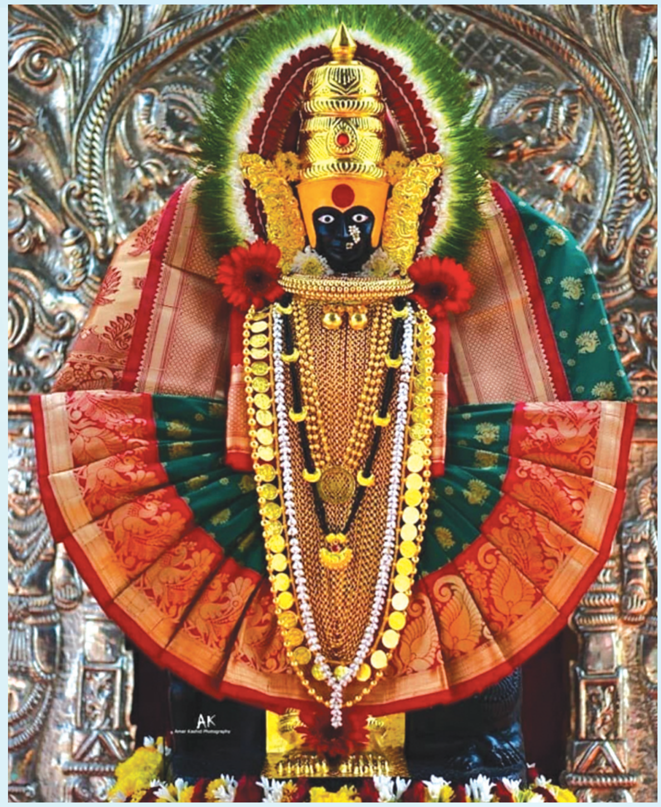

वक्षःस्थल पर अपने पांव से प्रहार किया। तब शांतचित्त भगवान विष्णु उठकर क्षमा मांगते हुए भृगु महर्षि का स्वागत किया। विष्णुजी ने भृगु महर्षि से पूछा कि ''आपने मुझे मारा, आपके पैरों को चोट हुई क्या?'' विष्णु ने भृगु महर्षि के पांव को दबाते हुए पांव के नीचे उसकी तीसरी आंख को निकाल कर फेंक दिया। इससे भृगु महर्षि की शक्तियां मिट गई। वे भगवान से क्षमा मांगते हुए प्रणाम करके चले गए।

भृगु महर्षि तो चले गए। माता लक्ष्मी विष्णु के वक्षःस्थल को अपना वास स्थान मानती थी। भृगु महर्षि विष्णु जी के वक्षःस्थल को मारने पर भी भगवान विष्णु भृगु महर्षि का सत्कार किया। विष्णु जी के इस व्यवहार को अपना अपमान समझ कर माता क्रोधित हो उठी और वैकुंठ को छोड़कर पृथ्वी की ओर चली गई। उन्होंने पृथ्वी पर वास करने के लिए योग्यस्थल ढूंढते-ढूंढते पंचगंगा स्थल कोल्हापुर पहुँची। यहाँ आकर माता तपस्या करने लगी। बाद में यही स्थिरवास करके लोगों की रक्षा करने लगी। यहाँ माता का उग्ररूप देखने को मिलता है। माना जाता है कि विपत्ति के

समय में माता अपने करों के से कोल्हापुर को ऊपर उठाकर रक्षा करेगी, इससे माता 'करवीर वासिनी' नाम से प्रसिद्ध हुई। माता को यहां 'अंबाबाई' नाम से भी पुकारा जाता है। हर साल नवरात्रि के अवसर पर, माता लक्ष्मी के लिए तिरुपति मंदिर से पारंपरिक रेशम की साड़ी (मनाचा शालू) भेजी जाती है।

पद्मावती के रूप में लक्ष्मी देवी की कथा :

श्रीहरि की नित्यशक्ति श्री लक्ष्मी थी। जब माता लक्ष्मी महाविष्णु को छोड़कर चली गई तो विष्णु भगवान लक्ष्मी की अनुपस्थिति को सह नहीं सके। विष्णुजी ने धरती पर श्रीनिवास (जो बालाजी या वेंकटेश्वर नाम से भी जाने जाते हैं) ने माता लक्ष्मी को ढूंढते हुए कोल्हापुर पहुँचकर 10 साल तक तपस्या की।

तब आकाशवाणी ने सुनाया ''यहाँ लक्ष्मी का दर्शन नहीं होगा। परन्तु दर्शन के लिए पद्मसरोवर जाना।'' तब श्रीनिवास तिरुचानूर के पद्मसरोवर के तट पर सूर्य नारायण स्वामी को प्रतिष्ठा करके माता के लिए 12 वर्ष तक उसके सम्मुख तपस्या की।

भगवान की तपस्या से प्रसन्न होकर माता लक्ष्मी कार्तीक मास, शुद्ध पंचमी, शुक्रवार, उत्तराषाढ नक्षत्र के दिन पाताल लोक से पद्मसरोवर में स्वर्ण सहस्त्र दल पद्म में आविर्भूत हुई। लक्ष्मी देवी सोने के कमल में जन्म लेने से उनका नाम पड़ा 'पद्मावती' या 'अलमेलुमंगा'। (तमिल भाषा में 'अलर' का अर्थ है - पुष्प, 'मेल' माने ऊपर, 'मंगै' माने 'सुंदर स्त्री'। अर्थात पद्म में प्रकाशित होनेवाली सुंदर स्त्री।) माता हजारों सूर्यकांति के समान प्रकाशित थी। उसकी सुंदरता अवर्णनीय थी। देवी-देवताएँ उनकी स्तुति की।

पद्मावती पद्ममाला को श्रीनिवास के गले में डालकर विवाह किया। वेदवती ही बाद में देवीमाँ के रूप में अवतार हुई। पद्मावती कलियुग में वेंकटेश्वर

की पत्नी के रूप में महालक्ष्मी का स्वरूप ही है। तिरुचानूर में माता के अवतरण के अवसर पर हर साल 10 दिनों तक ब्रह्मोत्सव मनाया जाता है। तिरुमल में वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के बाद तिरुचानूर में पद्मावती माँ का दर्शन जरूर करना चाहिए। नहीं तो तीर्थ यात्रा का फल नहीं प्राप्त होता है। भक्तों का विश्वास है कि माता की शरण में आने से समस्त पाप मिट जाते हैं।

लक्ष्मी देवी के विविध रूप :

देवी लक्ष्मी एक ही हैं, परन्तु वे विभिन्न रूपों में भक्तों की इच्छाएँ पूर्ण करती है। महालक्ष्मी के दो मुख्य रूप है श्री रूप तथा लक्ष्मी रूप। श्री रूप में माता कमल पर आसीन रहती है तो वही लक्ष्मी के रूप में वे भगवान विष्णु के साथ दिखाई देती है। पुराणों में अष्टलक्ष्मी का वर्णन है।

अष्टलक्ष्मी के रूप :

सौभाग्यदायिनी माँ लक्ष्मी के 8 अलग-अलग स्वरूपों को अष्टलक्ष्मी कहा गया है। ये अष्टलक्ष्मी अपने नाम के अनुसार भक्तों के मनोभीष्ट पूर्ण करती हैं। माता लक्ष्मी के 8 रूप ये हैं - आदिलक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, गजलक्ष्मी, संतानलक्ष्मी, वीरलक्ष्मी, विजयलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी।

अष्टलक्ष्मी की आराधना से मनुष्य अपनी समस्याओं से मुक्ति पाता है। श्रद्धालु केवल धन ही नहीं धान्य, शांति, यश, समृद्धि को प्राप्त करता है।

''ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं कुबेराय अष्टलक्ष्मी मम गृहे धनं पुरय पुरय नमः।''

उपर्युक्त मंत्र का जप करने से अष्टलक्ष्मी की कृपा से आर्थिक संकट दूर हो जाते हैं।

महालक्ष्मी से संबंधित कुछ त्योहार श्रद्धा पूर्वक वैभवता से मनाए जाते हैं। वे ये है- लक्ष्मी जयंती, वरलक्ष्मी व्रत, वैभव लक्ष्मीव्रत और दिवाली के दिन माँ लक्ष्मी की पूजा आदि।

लक्ष्मी जयंती :

लक्ष्मीदेवी के जन्म दिन के अवसर पर लोग धन-समृद्धि की प्राप्ति के लिए व्रत का पालन करते हैं। इस दिन सुबह स्नानादि करके साफ कपड़े पहनना चाहिए। पहले पूजा स्थल की सफाई की जाती है। एक पीठ पर लाल रंग का कपड़ा बिछाकर माता लक्ष्मी और भगवान विष्णु की मूर्ति या चित्रपट को स्थापित किया जाता है। माता लक्ष्मी को प्रसन्न करना है तो विष्णु भगवान की पूजा भी करनी चाहिए। श्रीहरि को पीले वस्त्र और देवी लक्ष्मी को लाल वस्त्र अर्पित किया जाता है। देवी के साथ गणेश जी को स्थापित करके पूजा करनी चाहिए। माँ को हल्दी से अभिषेक किया जाता है। मंत्रोच्छारण के साथ माँ को गंध, पुष्प, धूप, अक्षत, सिंदूर, चंदन, कमल के फूल और श्रृंगार का सामान अर्पित किये जाते है। माता को षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। माता को क्षीरान्न, नारियल तथा फलों को नैवेद्य के रूप में चढ़ाया जाता हैं। क्षीरान्न माता को बहुत पसंद है। अंत में आरती उतारनी चाहिए। माँ के सम्मुख उनके जन्मदिन की कथा, लक्ष्मी अष्टोत्तर या लक्ष्मी सहस्त्रनाम को पढ़ाना चाहिए। श्रद्धापूर्वक पूजा करने से सकल अभीष्ट पूर्ण हो जाते हैं।

पूजान्त में निम्न लिखित मंत्र का जप करते हुए माता को प्रणाम करना चाहिए।

''नमस्ते लोक जननी नमस्ते विष्णु वल्लभे।
पाहिमां भक्तवरदे श्री लक्ष्यैते नमो नमः।।''

वरलक्ष्मी व्रत :

श्रावण पूर्णिमा से पहले आनेवाले शुक्रवार के दिन विवाहित महिलाओं से महालक्ष्मी व्रत को मनाया जाता है। यह व्रत भारत के कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु और महाराष्ट्र में प्रसिद्ध है। माता वरलक्ष्मी में अष्ट लक्ष्मियाँ समाहित हुयी हैं। इस व्रत को विवाहित महिलाएँ अपने संसार की भलाई के लिए अत्यंत भक्ति और उत्साह से मनाती है।

वैभव लक्ष्मी व्रत :

वैभव लक्ष्मी व्रत शुक्रवार को किया जाता है। इस व्रत को अगर सुहागिन महिलाएँ करें तो सबसे मंगलकारी मानी जाती है। इस व्रत को नियमित रूप से 9 शुक्रवार किया जाता है। संध्या समय को विधिवत माता की षोडशोपचार पूजा की जाती है। पूजा के अंत में वैभव लक्ष्मी कथा को पढ़ना चाहिए। पूजांत में सुहागन से आशीर्वाद लेना चाहिए।

दिवाली में लक्ष्मी पूजा :

दिवाली के दिन माँ लक्ष्मी की पूजा की जाती हैं। कहा जाता है कि धन की देवी माँ लक्ष्मी इस दिन घर में प्रवेश करती हैं इस दिन धन-धान्य और संपदा और शांति के लिए संध्या समय में शुद्ध मन से परिवार सहित लक्ष्मी और प्रथम पूज्य गणेश भगवान की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। दिवाली में हर कोई अपने घर की सफाई कर उसे सुंदर रखता है। घर दीपों से जगमगाता है। मान्यताओं के अनुसार ऐसा करने से माँ लक्ष्मी घर में वास करती है।

''ॐ श्री महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ॐ।।''

सुख व समृद्धि के लिए उपर्युक्त लक्ष्मी मंत्र का जप करना चाहिए।

लक्ष्मी का वासस्थान :

अब जानेंगे महालक्ष्मी कहाँ वास करना पसंद करती है। सुबह उठते ही दोनों हथेली को देखते हुए भगवान का स्मरण करते हुए इस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए -

''कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्द प्रभाते करदर्शनम्।।''

इसका अर्थ है ''हाथ के ऊपरी हिस्से में माँ लक्ष्मी, मध्य में माता सरस्वती और हाथ के मूल में गोविंदा वास करते हैं। इससे प्रभात वेला में कर दर्शन करना चाहिए।'' नींद से उठते ही भगवान के स्मरण के फल स्वरूप दिन की शुरुआत अच्छी होगी। जहाँ माँ वास करती है वहां सकारात्मक भावनाएँ पैदा होती हैं।

शुक्रवार का दिन सकल सुख संपत्ति को देने वाली माता लक्ष्मी की पूजा के लिए समर्पित है। शुक्रवार के दिन विधिपूर्वक पूजा करके महालक्ष्मी मंत्र का जप करने से माता लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।

स्वयं माता-नारद और देवेंद्र से कहती है कि जो सूर्योदय से पहले स्नान करते हैं, घर को साफ सुथरा रखते है, घर के सामने रंगोली को चित्रित करते हैं, जहाँ हर दिन सुबह भगवान का स्मरण करके दीप चढ़ाकर पूजा की जाती हैं, उस घर में माँ का आगमन होता है। लक्ष्मी माता को हल्दी बहुत पसंद हैं। हरिद्रा, कुंकुम जैसे मांगलिक द्रव्यों में, धन-धान्य में, फल-फूल में भी माँ वास करती है। हमारे घरों में बेटी की तुलना लक्ष्मी से की जाती है।

जिस घर में झगड़ा न होकर शांति और आनंद के साथ रहते हैं, जहाँ स्त्रियों की रक्षा तथा मर्यादा होती है और बड़ों के प्रति गौरव और बच्चों के प्रति प्रेम रहता है वहाँ लक्ष्मी निवास करना पसंद करती हैं।

देवी लक्ष्मी सिर्फ धन-संपत्ति की प्रतीक नहीं है पर जीवन के उत्तम आदर्शों और सद्गुणों की प्रतीक भी हैं। इससे सत्य बोलने वालों को, अपने वचन को निभानेवालों को, धैर्य साहस दिखाने वालों को, दूसरों की सहायता करनेवालों को, श्रेष्ठ आचार-व्यवहार रखनेवालों को माता अनुग्रह करती है। जो अहंकार रहित है, जो आलस्य को छोड़कर विवेक से काम लेते हैं उन पर माँ आशीर्वाद बरसाती हैं।

माता लक्ष्मी की कृपा के बिना किसी को आंतरिक शांति या आनंद नहीं मिल सकता। लक्ष्मी पूजा से न केवल व्यक्ति की धन से जुड़ी समस्याएँ दूर हो जाती हैं, उसका घर हमेशा धन-धान्य से परिपूर्ण रहता है और वह सार्थक जीवन बिताता है।

❀❀❀

श्री वेंकटेश्वर धार्मिक सभा
तिरुमल
2024

सनातन हैंदव संस्कृति परिरक्षण में ति.ति.दे. ने सबसे आगे रहते हैं। इसके अंतर्गत तिरुमल, आस्थान मंडप में त्रिदिवसीय दि. 03-02-2024 से दि. 05-02-2024 तक श्री वेंकटेश्वर धार्मिक सम्मेलन को अत्यंत वैभवोपेत ढंग से संपन्न किया है।

मंगलवायिध्य के बीच संप्रदायिक रूप में श्रीदेवी, भूदेवी सहित श्री बालाजी को विशेष पूजाएँ आयोजित कर, आरती, समर्पित किया। तदनंतर ज्योति प्रज्वलन से धार्मिक सम्मेलन को आरंभ किया। इस संदर्भ में श्री वेंकटेश्वर वेदविश्वविद्यालय के वेद पंडित 'वेदस्वस्ति' का स्तोत्र किया है। बाद में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष जी श्री बी.करुणाकर रेड्डी जी ने प्रारंभ भाषण किया। ति.ति.दे. ई.ओ. श्री ए.वी.धर्मारेड्डी जी कार्यक्रम संदर्भ परिचय किया।

इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. के श्रीश्रीश्री पेद्द(बडा) जीयर स्वामीजी, श्रीश्रीश्री चिन्न(छोटे) जीयर स्वामीजी के सात इस सम्मेलन में देश के विविध मठाधीश, पीठाधीश, स्वामीजी ने भाग लिया। इस संदर्भ में स्वामीजियों का दिव्य अनुग्रह भाषण सप्तगिरि पाठकों के लिए दी जा रही है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल, आस्थान मंडप में
दि. 03-02-2024 से
दि. 05-02-2024 तक संपन्न
'श्री वेंकटेश्वर धार्मिक सभा'।

तिरुमल, आस्थान मंडप में
दि. 03-02-2024 से
दि. 05-02-2024 तक संपन्न
'श्री वेंकटेश्वर धार्मिक सभा'।

**श्री वेंकटेश्वर धार्मिक सभा के समापन समारोह में निष्कर्ष भी प्रकटित किया है।
तिरुमल श्रीश्रीश्री पेद्द(बडा) जीयर स्वामीजी, श्रीश्रीश्री चिन्न(छोटे) जीयर स्वामीजी,
न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.करुणाकर रेड्डी जी, ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
ति.ति.दे. संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., उस समय के
संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्रीमती सदा भार्गवी, आई.ए.एस., के साथ अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।**

तिरुमल, श्री वेंकटेश्वर धार्मिक सभा में विविध मठाधिपति, पीठाधिपतियों का दिव्य अनुग्रह भाषण

तिरुमल श्रीश्रीश्री पेद्द(बडा) जीयर स्वामीजी

तिरुमल श्रीश्रीश्री पेद्द(बडा) जीयर स्वामीजी ने कहा कि भगवान जी के चरणों के पास इस धार्मिक सम्मेलन को आयोजित करने के लिए देश भर से मठाधीश और पीठाधीश यहा आमंत्रित करना बहुत खुशी की बात है। स्वामीजी अपनी-अपनी परंपराओं के अनुसार धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं, उन्होंने बहुमूल्य सुझाव लिए और बताया कि ति.ति.दे. धर्म का और अधिक प्रचार-प्रसार करेगा।

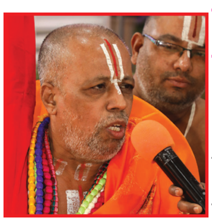

तिरुमल श्रीश्रीश्री चिन्न(छोटे) जीयर स्वामीजी

श्रीश्रीश्री चिन्न(छोटे) जीयर स्वामी ने कहा कि यह अच्छा संकेत है कि इतनी बड़ी संख्या में स्वामीजी आशीर्वाद देकर धार्मिक सम्मेलन में भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि पहले यदि आप यज्ञ करते तो आपको मोक्ष मिलता था, फिर कलियुग में यदि आप भगवान का नाम स्मरण जपते हैं तो आपको भगवान की कृपा मिलती है। तब कष्ट दूर होकर, मुक्ति मिलता है।

माता शिवानंद सरस्वती स्वामी (प्रतिनिधि) माता शुश्रुषानंद स्वामी

सनातन धर्म के कार्यक्रमों का सभी क्षेत्रों में विस्तार किया जाना चाहिए। बच्चे और युवा सनातन धर्म के बारे में जानना चाहिए। धर्म प्रचार कार्यक्रम में अपना सहयोग ति.ति.दे. को दी जाति है।

स्वस्वरूपानंदगिरि स्वामी, ललिता पीठम, श्रीनिवासमंगापुरम

तिरुपति के आस-पास के क्षेत्रों में भक्तिपूर्ण, आध्यात्मिक वातावरण को प्रभावित करने का ति.ति.दे. ने प्रयास करना चाहिए।

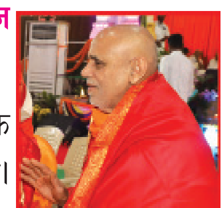

श्री विद्याशीर्ष तीर्थ स्वामीजी, व्यासराज मठ

तिरुमल तिरुपति देवस्थान सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार में विशेष कार्य कर रहा है। अखंड सुंदरकांड पारायण, गीता पारायण जैसे वैदिक धर्म प्रचार कार्यक्रमों में अध्यक्षजी और कार्यनिर्वहणाधिकारी का योगदान महत्वपूर्ण है।

श्री शिवानंद स्वामी, शैव क्षेत्र, ताल्लपालेम, गुंटूर

तिरुमल तिरुपति देवस्थान को धर्म प्रचार गतिविधियों को ग्रामीण स्तर तक ले जाना चाहिए। गो शाला और मंदिरों की स्थापना कर उनका निर्माण कराकर वैदिक धर्म का व्यापक प्रचार किया जा सकता है। जिला स्तर पर गो संरक्षण के लिए 'गो-एम्बुलेंस' की व्यवस्थित होना चाहिए। जिला स्थायी में गुरुकुल पाठशालाओं का निर्माण होना चाहिए।

श्री स्वात्मानंदेंद्र सरस्वती स्वामीजी, विशाखा शारदा पीठम, विशाखपट्टनम

ति.ति.दे. को इस तरह से कार्यक्रम शुरू करना चाहिए कि युवा सनातन धार्मिकता पर ध्यान दें। एस.वी.बी.सी. कार्यक्रम अच्छे हैं। गो संरक्षण कार्यक्रम अच्छे हैं। रूढ़िवादी वैदिक परंपराओं को इस तरह से प्रचारित करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता को सॉफ्टवेयर तैयार किया जाना चाहिए कि हर कोई इसे समझ सके। मंदिरों के स्थानीय क्षेत्र के निवासीय पुरोहितों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए और उन्हें धर्म के विकास के लिए कार्य करना चाहिए।

श्री प्रकाशानंद सरस्वती स्वामी, ज्ञान सरस्वती पीठम, परमानंद आश्रम, विजयवाडा

वसुधैव कुटुम्बकम व्यवस्था की पहचान की जानी चाहिए और रागद्वेष से बचना चाहिए। भगवद्गीता को अर्थ, तात्पर्य सहित प्रस्तुत किया जाना चाहिए। गुरुकुलों का निर्माण होना चाहिए।

श्री विश्वयोगी विश्वंजी, गुंटूर

कार्यनिर्वहणाधिकारी एवं अध्यक्ष जी द्वारा वैदिक धर्म के संरक्षण हेतु किये गये सभी कार्यक्रम अच्छे हैं। श्री वेंकटेश्वर स्वामी ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति के रूप में आनंदनिलय में विद्यमान हैं। धर्म के विकास के लिए कार्य करना चाहिए।

श्री शिव दर्शनम माताजी, प्रोद्दुटूरु

ति.ति.दे. को मठाधीशों के विचारों को आधुनिक तरीके से आगे बढ़ाना चाहिए। छात्रों को हमारी सांस्कृतिक परंपराओं और धर्म के बारे में जागरूक करने के लिए कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए। तिरुपति परिसर प्रांतों में भक्तिपूर्ण वातावरण को तैयार करना चाहिए।

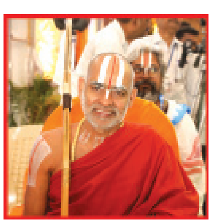

श्री देवनाद रामानुज जीयर, षंशाबाद

तिरुमल क्षेत्र में ध्यान मंदिरों की स्थापित किये जाने चाहिए। सामाजिक माध्यमों से सनातन धर्म को आगे बढ़ाने के कार्य किये जाने चाहिए।

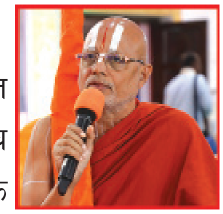

श्री रामचंद्र रामानुज जीयर, भीमवरम्

स्वामीजी अपने भाषण में समाज को सुसंस्कृत जीवन के लिए आध्यात्मिक शिक्षा के महत्व के बारे में अवगत कराया। द्रविड़ वैदिक शिक्षा ने यह भी सिखाया कि आजकल समाज के लिए आवश्यक है।

श्री विरजानंद स्वामीजी, ब्रह्मंगारी मठ, कडपा

निम्न स्तर तक धर्म प्रचार को ले जाना चाहिए। भजन मंडली द्वारा बच्चों को भगवद्गीता, संस्कृत सिखाई जानी चाहिए। श्रीवैष्णव तत्व आमतौर जन-जन तक पहुँचना है।

श्री स्थित प्रज्ञानंद सरस्वती स्वामीजी, उत्तरकाशी

प्रत्येक नागरिक को हिंदू संस्कृति, संप्रदाय का सम्मान करना चाहिए। ति.ति.दे. को हर साल ऐसे धर्म सम्मेलनों का आयोजन करना चहिए। और सात-सात लड़के और लड़कियाँ बचपन से आगे बढ़कर सनातन धर्म की ओर चल सकें।

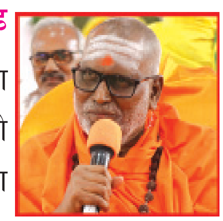

श्री परिपूर्णानंद स्वामीजी, व्यासाश्रम, एर्पेड

निम्न स्तर तक धर्म प्रचार को ले जाना चाहिए। धर्म ही वह मुख्य कारण है जिसकी वजह से भारत दुनिया के सामने एक उदाहरण के रूप में खड़ा है।

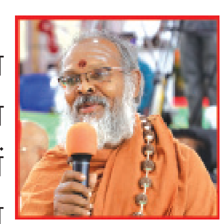

श्री हरितीर्थानंद स्वामीजी, नेल्लूर

भक्तों के द्वारा ति.ति.दे. को दी गई संपत्ति की रक्षा करनी चाहिए। ति.ति.दे. कल्याण मंडपम उन दिनों आध्यात्मिक गतिविधियों के लिए आयोजित किए जाते थे जब वे खाली होते थे।

श्री सत्यानंद भारती, चिदानंद आश्रम, गन्नवरम

ति.ति.दे. को बड़े पैमाने पर धर्मार्थ गतिविधियाँ चलानी चाहिए। धर्म परिषद के कार्यक्रम देश ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में फैलना चाहिए। ऐसे और भी सम्मेलन होते रहने चाहिए।

श्री रम्यानंद भारती, श्री शक्ति पीठम, रायलचेरुवु

वर्तमान में हिंदू धर्म पूरे ब्रह्मांड में फैल गया। सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार में एस.वी.बी.सी. चैनल का अद्वितीय स्थान है। राज्य सरकार ने शिक्षा प्रणाली में डिजिटलैज शुरू किया है। इसी विधान को धर्म प्रचार में लाने का कोशिश करना है। बच्चों को ध्यान में रखते हुए धर्मार्थ कार्यक्रमों का बनाया चाहिए।

श्री अष्टाक्षरी संपत कुमार रामानुज जीयर स्वामीजी, विजयवाडा

ति.ति.दे. में कई प्रसिद्ध वैदिक विद्वान हैं। दर्शन के लिए आने वाले भक्त संप्रदाय वस्त्र में आने की सूचना दीजिए।

श्री सच्चिदानंद सरस्वती, तपोवनम, तुनि

पुस्तक प्रसाद को मजबूत करना चाहिए। वैदिक विद्वानों को प्रोत्साहित करना चाहिए। सुदूर गाँव, क्षेत्रों में भजन, कीर्तन जैसे कार्यक्रमों को आयोजित करना है।

डॉ.गौरीशंकर, श्री शृंगेरी पीठम

वैदिक विद्यालयों का स्तर ऊँचा उठाया जाना चाहिए। हिंदू धर्म में परिवर्तित होने के लिए खुदाई की जाने वाली आवश्यक निर्देश तैयार करना चाहिए।

श्री चल्ला विश्वनाथ शर्मा, श्री कांची कामकोटि पीठम

प्राच्य महाविद्यालयों की स्थापना की जानी चाहिए और पुराणों पर परिशोधन करके, सनातन हैंदव धर्म प्रचार में भागीदार होना चाहिए।

श्री राघवुलु, विश्व हिंदू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय सचिव

उन्होंने कहा कि मंदिरों की व्यवस्था को सुरक्षित रखने की जरूरत है। यह आयोजन समाज को एकीकृत रखने का उपयोग बन जाता है। महिलाओं को धर्मग्रन्थ पाठ के समय में शामिल किया जाना चाहिए। धर्म प्रचारक सभी क्षेत्रों में पहुँचाकर धर्म प्रचार करना चाहिए। धर्मांतरण रोकने के लिए कार्रवाई करनी चाहिए।

श्री वेदुरुपाका स्वामीजी, विजयदुर्गा पीठम

करुणाकर रेड्डी जी के अध्यक्ष था में पिछले दिनों में वे अध्यक्ष जी के समय में ऐसे सम्मेलन को आयोजित किया था, फिर उन्होंने हमारे द्वारा दिए गए निर्देशों को लागू किया। कार्यनिर्वहणाधिकारी भी मंदिर अभिवृद्धि केलिए विशेष योगदान किया। यह एक अच्छा विकास है कि कार्यनिर्वहणाधिकारी भी आम जनता के लिए अधिक प्राधान्य दी जा रहा है।

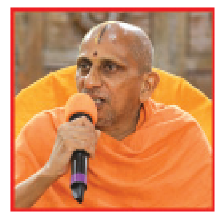

श्री सुजयनिधि तीर्थ स्वामीजी, श्री पादराज मठ, मुलबागल

देश के घर-घर तक रीति-रिवाजों और परंपराओं का प्रचार-प्रसार हो, ऐसे धर्म प्रचार किये जाना चाहिए। सनातन धर्म व्याप्ति में ति.ति.देवस्थान का विशेष स्थान है।

श्री मुकुन्दानन्द महाराज, ज्योतिर मठ, उत्तराखंड

सनातन धर्म केवल मनुष्य ही नहीं है, पेड़-पौधे और जानवर सभी ब्रह्माण्ड समृद्ध से रहना हैं। आधुनिक शिक्षा में हमें अपने हिंदू धर्म, संस्कृति, परंपराओं के बारे में सभी को अवगत कराना चाहिए और गाय को विश्व माता के रूप में घोषित करना चाहिए।

श्री विद्या वल्लभ तीर्थ स्वामी, काणियूर मठ, उडुपी

देश के सभी मठाधीशों और पीठाधीशों को एक साथ लाकर इस कार्यक्रम को शुरू करना आनंददायक विषय है। बच्चों में

नैतिकता बढ़ाने के लिए आयोजित की गई कार्यक्रम संतोष है। गुडिको गोमाता कार्यक्रम सफल हुआ है और वेद अध्ययन छात्रों को आर्थिक सहयोग देना है।

श्री शेनूडलंकार शेनू बग मन्नार जीयर स्वामी, मन्नार गुडी

ति.ति.दे. ने आंध्रप्रदेश और तेलंगाना राज्यों में धर्मांतरित लोगों को घूमने से रोकने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। ति.ति.दे. को दुनिया भर में हिंदू धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए संरक्षण के लिए काम करना चाहिए और चिकित्सा, शिक्षा संस्थानों का विस्तार करना चाहिए।

श्री विद्या विजय तीर्थ स्वामी, बैंगलोर

दास साहित्य का प्रचार-प्रसार अच्छे से किया जाता है। धार्मिक, सांस्कृतिक, शिक्षा, चिकित्सा सेवा कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। साहित्य, मूर्तिकला, संगीत विज्ञान आदि में विशेष कृषि कर रही है। सप्तगिरि मासिक पत्रिका कई भाषाओं में प्रकाशित होती है बहुत आनंददायक है।

श्री अनुपमानंद महाराज, रामकृष्ण सेवा समिति, कडपा

यह प्रसन्नता की बात है कि अध्यक्ष जी ने घोषणा की है कि इस सम्मेलन में व्यक्त विचारों और सुझावों को स्वीकार किया जाएगा और लागू किया जाएगा। भावी पीढ़ी को धर्म की शिक्षा देने के लिए बेहतर प्रयास करने चाहिए। युवाओं को धर्माचरण में रुचि लेनी चाहिए। संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए।

श्री कमलानंद भारती स्वामी, भुवनेश्वरी पीठम, गन्नवरम, विजयवाडा

ति.ति.दे. दुनिया भर के हिंदुओं को भगवान द्वारा दिया गया एक वरदान है। करुणाकर रेड्डी जी के द्वारा घर-घर तक धर्म प्रचार के कर-पत्र पहुँचना और धर्म अभियान चलाने के लिए धर्म प्रचार परिषद का आयोजन किया गया था। दलित गोविंद के माध्यम से निम्न स्तर तक धर्म प्रचार प्रसार करना अच्छीबात है।

श्री रेवती रमण दास, इस्क़ॉन के अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

एस.वी.बी.सी. के सभी कार्यक्रम अच्छे हैं। रामायण, भागवतम जैसे आदि कार्यक्रम एस.वी.बी.सी. के द्वारा प्रसारित हो रहा हैं। देश भर में गोशालाएँ की व्यवस्था की जानी चाहिए। तिरुपति में गोंविद नाम स्मरण के लिए कोशिश करना है।

श्री वासुदेवानंदगिरि स्वामीजी, पेद्दपुलीपाका आश्रम, कृष्णा जिला

गो संरक्षण के लिए कृषि करना है। स्त्रियों को मातृमूर्तियों का आदर करते हुए आदि पूजा कार्यकलापों में भाग लेना चाहिए।

श्री सौंदरराजन रंगराजन, चिलुकुरु बालाजी मंदिर, हैदराबाद

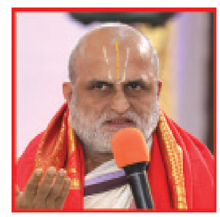

यह सम्मेलन मंदिरों में धर्म रक्षा के लिये आयोजित किया गया था। मंदिरों में धर्म की रक्षा के लिए साझेदारी में पुजारी बनाए जाने चाहिए। फिर समुदायों को उचित स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए, ओंटिमिट्टा श्री राम मंदिर में मालहरिदास स्थल पुराण है, वहाँ एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। निम्न स्तर तक धर्म प्रचार प्रसार करने का प्राधान्य दिया जाना चाहिए।

श्री सुबुदेंद्र तीर्थ स्वामीजी, श्री राघवेंद्र स्वामी मठ, मंत्रालय

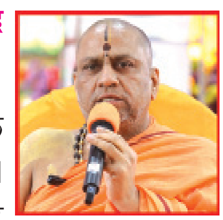

तिरुमल तिरुपति देवस्थान सनातन धर्म के संरक्षण के लिए बहुत मेहनत कर रहा है। तिरुपति में स्थित मंदिरों में धर्म प्रचार पर ध्यान केंद्रित करना है। गोविंद नामस्मरण की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि इसे सभी क्षेत्रों में सुना जा सके।

श्री शठगोप श्री रामानुज जीयर, श्रीविल्लिपुत्तूर

सनातन धर्म के संरक्षण के लिए विशेष प्रयास करते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष जी और ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी जी को शुभाशीष है। स्वामीजी के दर्शन के लिए कोई भी आ सकता है। निर्मल मन से दर्शन कर सकते है।

श्री नारायणजी महाराज, द्वारका, शंकराचार्य मठ, गुजरात

समय आ गया है कि विभिन्न पीठाधीश, मठाधीश मिलकर धर्म प्रचार प्रसार करना है। ति.ति.दे. को और अधिक धार्मिक अभियान आयोजित करने की बहुत आवश्यकता है।

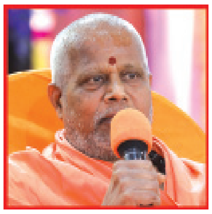

श्री विद्या प्रकाशनंदगिरि स्वामीजी, शुक ब्रह्माश्रम, श्रीकालहस्ति

श्री सूक्तम, श्री लक्ष्मी अष्टोत्तर और धर्म के संबंधित पुस्तकों को मुद्रित किया जाना चाहिए। ति.ति.दे. को वर्तमान पीढ़ी के बच्चों को हिंदू सनातन धर्म में निहित नैतिक मूल्यों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए स्कूल स्तर से ही सनातन धर्म को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए।

श्री शंकर विजयेंद्र सरस्वती स्वामीजी, श्री कांची कामकोटि पीठम

ति.ति.दे. द्वारा कार्यान्वित धर्मार्थ कार्यक्रम अच्छे हैं। प्राचीन मंदिरों में भी धार्मिक प्रचार करना चाहिए। भक्तों को तिलक धारण करके हिंदू धर्म का प्रचार करने का प्रयास करना चाहिए। धार्मिक हिंदू कार्यक्रमों को गाँवों तक शामिल किया जाना चाहिए। धर्मांतरित हिंदुओं को फिर वापस हिंदू धर्म में लाना।

श्री रविशंकर गुरूजी, बैंगलोर

तिरुमल तिरुपति देवस्थान सनातन धर्म के प्रसार के लिए बहुत मेहनत कर रहा है। उन्होंने कहा है कि अब समय आ गया है कि युवा धर्म की ओर चलें और धर्म की रक्षा के लिए युवाओं का महत्व बहुत अधिक है। गाँवों में पुजारियों को वैदिक पूजा गतिविधियों में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। ति.ति.दे. ने सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में लोक गीतों, यक्षगानम, भजन और कीर्तन के माध्यम से धर्म का व्यापक प्रचार करने के लिए कदम उठाना चाहिए। अन्नमय्या के कीर्तन, भक्ति गीतों के माध्यम से नास्तिक भी आस्तिक बनने का अवकाश मिल सकता हैं।

श्री विद्याशंकर भारती स्वामी, पुष्पगिरि मठ, कडपा जिला

परंपराओं के संरक्षण के लिए सभी को मिलकर काम करना चाहिए। जैसे-जैसे मंदिर बढ़ रहे हैं, वैसे ही यज्ञाधिक पूजा वैदिक कार्यक्रम भी बढ़ाने चाहिये। इस सभा में लिये गये निर्णयों को कार्यान्वित किया जाये।

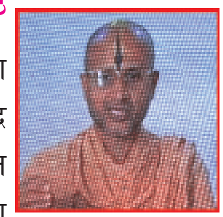

श्री सत्यात्मा तीर्थ स्वामीजी, उत्तरादी मठ

यदि वैदिक रक्षा होगी तो धर्म की रक्षा होगी। ति.ति.दे. गोशाला, आयुर्वेद, वेद पाठशाला जैसे कई संस्थानों का आयोजन करता है और सनातन हिंदू धर्म को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। इस धर्मप्रचार व्याप्ति के लिए मंदिर निर्माण, भजन धार्मिक परिषदों की स्थापना, आध्यात्मिक पुस्तकों का आयोजन, स्वामी की चित्र पठ वितरित करना और बच्चों को त्योहार, परंपराओं के बारे में जानकारी देना चाहिए।

श्री विद्यादीश तीर्थ स्वामीजी, पलिमर मठ, उडुपी

पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए कि स्कूली छात्रों को धर्म की शिक्षा दी जाए, छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए योग का अभ्यास कराया जाए, संस्कृत भाषा के माध्यम से हिंदू सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार किया जाए। संस्कृत भाषा सभी को सिखाई जानी चाहिए, ति.ति.दे. सनातन धर्म के संरक्षण में बहुत मेहनत कर रहे हैं।

श्री विदुशेखर भारती तीर्थ स्वामीजी, श्रृंगेरी शारदा पीठम, उत्तराधिकारी

तिरुमल में धार्मिक सम्मेलन आयोजित करना बहुत आनंददायक है। कुछ लोग सनातन धर्म को नुकसान पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। सनातन धर्म से ही विश्व शांति संभव है। आम लोगों को भी यह विषय पर जानकारी दी जाये।

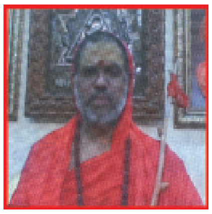

श्री विजयदत्तानंद स्वामीजी, उत्तराधिकारी, दत्त पीठम, मैसूर

श्री वेंकटेश्वर स्वामी तिरुमल में धर्मस्थापना के लिए आये थे, वैदिक विज्ञान की संरक्षणा बहुत आवश्यक है। गोविंद कोटि लिखे भक्तों को स्वामी के दर्शन देना एक बहुत अच्छा निर्णय है। आम जनता तक धार्मिक प्रचार पहुँचना चाहिए।

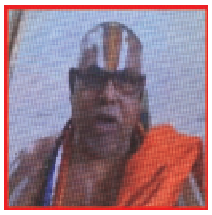

श्रीवन् शठगोप श्रीरंगनाथ यतींद्र महादेशिकन स्वामी, अहोबिलम मठ

वेदों में वर्णित बातों का प्रचार-प्रसार करना चाहिए। वेदों की रक्षा करने से आपकी रक्षा होगी। वेद पाठ को पारायण करने का प्राधान्य दी जानी चाहिए। हिंदू धर्म की रक्षा के लिए सभी को मिलकर काम करना चाहिए।

श्री सिद्धेश्वरानंद भारती तीर्थ स्वामीजी, मौना स्वामी मठ, कुर्त्तालम पीठाधिपति

भारत जैसे हिंदू देश में, जहाँ ७५ प्रतिशत आबादी हिंदू है, विचारों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। हिंदू समृद्धि में ति.ति.दे. की भूमिका महत्वपूर्ण है। यहाँ तक कि जब हिंदू धर्म के साथ कोई समस्या आती है तो भिक्षु भी हथियार उठा लेते हैं। लेकिन ऐसा नहीं होगा। बहुत बदलाव आ रहा है। धर्म का प्रचार मूर्ति पूजा और ध्यान के माध्यम से करना चाहिए।

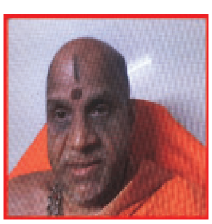

श्री सुगुणेंद्रतीर्थ स्वामीजी, पुत्तिगे मठ, उडुपी

पुराण, इतिहास युवाओं को धर्म के मार्ग पर ले जाने में मदद करती हैं। रामायण, भारत ग्रंथ युवाओं, बच्चों की मार्गदर्शिका दिखाती है।

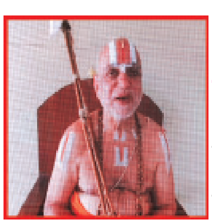

श्री यदुगिरि यतिराज स्वामीजी, श्री यदुगिरि यतिराज मठ, मेलकोटे, कर्णाटक

ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष, ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी को हमारा धन्यवाद। देवस्थान ने कई अच्छे कार्यक्रम कर रही हैं और मुझे उम्मीद है कि ये कार्यक्रम सफल होंगे।

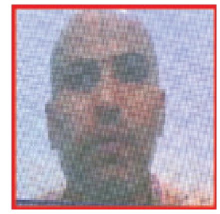

श्री ईशप्रियतीर्थ स्वामीजी, आदमारु मठ, उडुपी

हिंदुओं को वेदों और उपनिषदों का ज्ञान विकसित करना चाहिए और सभी को शिक्षा के महत्व से अवगत कराना चाहिए। ज्ञान की संपदा का विकास होना चाहिए। गाँवों में प्राचीन मंदिरों के विकास के प्रयास किये जायें तथा सनातन संप्रदाय को घर-घर तक पहुँचाना जाये।

श्रीमद् परमात्म शेट्टि आदि श्री मधुरकवि वनमामलै रामानुज जीयर स्वामी, वनमामलै मठ, नान्गुनेरि, तमिलनाडु

सनातन धर्म सभी के लिए मार्गदर्शक है। इसे किसी ने नहीं बनाया। इसी प्रकार यह कहना भी हमारी प्रथा है कि पुनर्जन्म नहीं होता। इसलिए हमें अपनी रूढ़िवादिता पर कायम रहना चाहिए।

श्री वराहमहादेशिकन स्वामी, श्रीमद् आंडवन आश्रमम, श्रीरंगम

गीताचार्य हमें गीता में जीने के अच्छे तरीके बताते हैं। इसलिए गीता को गाँव-गाँव तक ले जाना चाहिए। ऐसा करने से हमारे साथ-साथ देश को भी फायदा होगा। इस सम्मेलन के आयोजन के लिए अध्यक्ष एवं कार्यनिर्वहणाधिकारी को शुभाशीष। मानव सेवा ही माधव सेवा है। तो आइए लोगों के लिए अच्छे कार्य करें और भगवान वेंकटेश्वर की कृपा प्राप्त करें। आचार्य पुरुषों द्वारा बताई गई रीतियों का पालन करें। ऐसे चलोगे तो अच्छा होगा।

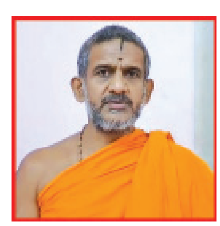

श्री विश्वप्रसन्न तीर्थ स्वामीजी, पेजावर मठ

ति.ति.दे. दास साहित्य परियोजना के माध्यम से भक्ति कार्यक्रम अच्छे और संतोषजनक ढंग से संचालित किए जा रहे

हैं। भक्ति कार्यक्रमों को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाया जाना चाहिए। सभी स्त्री-पुरुषों को दैवीय कार्यों में भाग लेना चाहिए। युवाओं को धार्मिक संस्कार सिखाना चाहिए। भगवान का स्मरण करना चाहिए। सुझाव दिया गया है कि बच्चों का नाम उसके अनुसार रखना ही सही तरीका है।

एम्पेरुमानार जीयर स्वामी, आल्वार तिरुनगरि, तमिलनाडु

हम सभी को अपनी संस्कृति और परंपराओं का सम्मान और पालन करना चाहिए। हमें आनेवाली पीढ़ी को अपने सनातन धर्म से जुड़ी बुनियादी बातों जैसे पुराण, महाभारत, रामायण आदि के बारे में भी बताना चाहिए। हमें अपनी संस्कृति को गाँव-गाँव तक पहुँचाना चाहिए और वहाँ के लोगों को अच्छे रास्ते पर चलने का प्रशिक्षण देना चाहिए। विश्व के सभी प्राणियों को बेहतर तरीके से जीने के लिए और हमारे सनातन धर्म को विश्व स्तर पर फैलाने के लिए ऐसे सम्मेलन बहुत महत्वपूर्ण हैं।

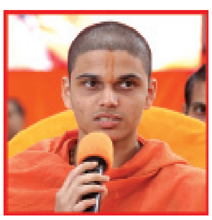

श्री वेदवर्धन स्वामी, शीरूरु मठम, उडुपी

बच्चों को ईश्वर के प्रति जागरूक करने के लिए प्रत्येक गाँव में सप्ताह में एक बार प्रवचन, प्रार्थना के द्वारा अवगत कराने चाहिए। तिरुमल तिरुपति देवस्थान द्वारा किये गये कार्यक्रम अच्छे हैं।

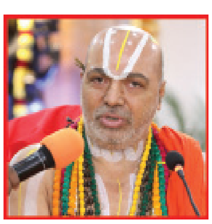

श्री परवकोट्टै चिन्न आंडवन श्री श्रीनिवास गोपाल महादेशिकन स्वामी, पौंडरीकपुरम आश्रम, श्रीरंगम

तिरुमल तिरुपति देवस्थान द्वारा किये गये कार्यक्रम अच्छे हैं। सप्तगिरि मासिक पत्रिका कई भाषाओं में प्रकाशित होती है और आनंददायक है। ति.ति.दे. के धर्म के प्रचार-प्रसार में कोई विकल्प नहीं है। आपकी सेवाएँ अधिक सफल होनी चाहिए। वेदों का ज्ञान सबको कराना चाहिए।

श्री विध्येंद्रतीर्थ स्वामीजी, चित्रापूर मठ, उडुपी

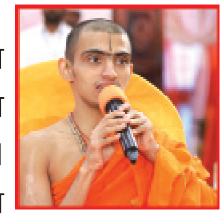

यदि हम धर्म की रक्षा करेंगे तो यह धर्म हमारी रक्षा करेगा। इस सनातन धर्म प्रचार हर जगह प्रचार करना चाहिए, समाज की सेवा करने से हमें पुण्य मिलेगा। इस सम्मेलन के आयोजन के लिए कार्यकारीअधिकारी और अध्यक्षजी को धन्यवाद कहा।

श्री सदाशिव आश्रम स्वामीजी, श्रृंगेरी ब्रह्मानंद मठ, वाराणसी

श्रीविष्णु सहस्रनाम पारायण, संस्कृत सुभाषितों को विशेष रूप से पढ़ाया जाना चाहिए। ध्यान रखा जाना चाहिए कि पाश्चात्य संस्कृति न बढे, ति.ति.दे. धर्मार्थ सेवा कार्यक्रमों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक विस्तारित करने की आवश्यकता है।

श्री सुविध्येंद्र तीर्थ स्वामी, बैंगलोर

वेदों के संरक्षण की आवश्यकता है, वेदों के संरक्षण से ही धर्म का संरक्षण होता है। गो-संरक्षण की बहुत आवश्यकता है। गाँव-गाँव में मंदिर बनने चाहिए। संस्कृत भाषा के विकास के लिए प्रयास करना चाहिए।

श्री वेंकटेश्वर धार्मिक सम्मेलन में संकल्प निष्कर्ष

1) जो लोग हिंदू धर्म में शामिल होना चाहते हैं उनके लिए पवित्र जल संप्रोक्षण करने की प्रक्रिया

इस सम्मेलन में पधारे हुए अनेक स्वामीजी ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया है कि तिरुमल में अन्य धर्मों के किसी भी व्यक्ति के लिए स्वेच्छा से हिंदू धर्म में परिवर्तित होने के लिए एक प्रांगण स्थापित किया जाना चाहिए और पवित्र जल से विधि पूर्वक अनुष्ठान प्रक्रिया करके स्वागत किया जाना चाहिए। एक बार स्वामीजी के दर्शन कराने का सम्मेलन ने निर्णय लिया।

2) महाकाव्य अभियान

बच्चों से लेकर वयस्कों तक हर कोई हिंदू धर्म को सरल तरीके से समझाने के लिए पुराण उपयुक्त बनता है। सम्मेलन ने निष्कर्ष निकाला कि पुराणों को व्यापक रूप से फैलाने के लिए सक्षम पुराण द्रष्टाओं को प्रशिक्षित करना आवश्यक है।

3) तिरुपति में पवित्र वातावरण

तिरुमल पहुँचने के लिए सभी तीर्थयात्रियों को तिरुपति आना होगा, ताकि तीर्थयात्रियों को तिरुमल के जैसे भक्ति पूर्ण वातावरण, आध्यात्मिक भाव को तिरुपति में लाने का सम्मेलन ने तदनुसार तिरुपति को बदलने का निर्णय लिया।

4) समैक्यता भावना को बढ़ावा देना और मतांतरिकरण को रोकने की सुझाव पर निष्कर्ष

हिंदू समुदाय के कुछ समुदायों द्वारा उनके प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार के कारण वे हिंदू समाज से अलग होकर दूर होजाते हैं। समय आ गया है कि उन सभी को शामिल किया जाए और कहा जाए कि सनातन धर्म सभी का है। ऐसा सभा ने निष्कर्ष किया है।

5) मंदिरों की संरक्षण संरचना

चूंकि ऐसे हजारों मंदिर शिथिलावस्ता में है। और कुछ क्षेत्र पूरी तरह से परित्यक्त हैं, सम्मेलन ने निष्कर्ष निकाला कि जहाँ मंदिर नहीं हैं वहाँ मंदिर बनाने की निर्णय लिया है। और हरिजन, आदिवासी, मत्स्कार वाले क्षेत्रों में सभी को संस्कार देने के लिए मंदिर बनाने की सख्त जरूरत है। ति.ति.दे. श्रीवाणि ट्रस्ट के द्वारा हरिजन, आदिवासी, मत्स्कार वाले क्षेत्रों में 3600 मंदिरों का निर्माण किया।

6) गो संरक्षण

हिंदुओं के लिए गाय माता के समान है। लेकिन आज के समाज में आधुनिक आदतों के प्रभाव के कारण गो रक्षा में कमी आ रही है क्योंकि सम्मेलन में निष्कर्ष निकाला गया कि गो रक्षा बहुत जरूरी है।

7) वेद, शास्त्र, शिक्षा की देखभाल

हिंदू धर्म का स्रोत वेद हैं। सम्मेलन ने निष्कर्ष निकाला कि वैदिक विज्ञान का संरक्षण बहुत आवश्यक है क्योंकि इन यज्ञों को करने और इन अच्छे कार्यों को करने के लिए वैदिक विज्ञान आवश्यक है।

8) धर्म, आचार, परंपरा के प्रसार व संरक्षण

सम्मेलन ने निष्कर्ष निकाला कि उचित प्रचार की कमी के कारण, परंपरा में हिंदू धर्म के प्रति रुचि और ध्यान की कमी के कारण धर्म का प्रचार इस तरह से करना आवश्यक है जो सभी के लिए समझ में आए।

9) मातृमूर्ति की धर्मनिष्ठा

सम्मेलन ने निष्कर्ष निकाला कि हिंदू धर्म में प्रत्येक माँ को बचपन से ही अपने बच्चों में धर्म की शिक्षा देने के लिए माँ के समान प्रेम को विकसित करने के लिए प्रशिक्षण, गतिविधियों की आवश्यकता होती है।

10) युवाओं में धर्म पर आसक्ति लाना

सम्मेलन ने निष्कर्ष निकाला कि आज के समाज में बहुत से हिन्दू धर्म के युवति-युवक आस-पास के वातावरण के प्रभाव के कारण मतांतरिकरण के प्रलोभन में आकर अपने स्वधर्म से विमुख हो रहे हैं। इस स्थिति को सुधारने के लिए कई प्रशिक्षण शिविरों और अन्य योजनाओं की आवश्कता है।

11) जैव-विविधता का संरक्षण

सम्मेलन ने निष्कर्ष निकाला कि चूंकि तिरुमल सप्तगिरि कई दुर्लभ पौधों और जानवरों की प्रजातियों के लिए एक प्राकृतिक आश्रय है, इसलिए इन तिरुमल जंगलों और तिरुमल में हजारों तीर्थों की रक्षा करने और तिरुमल, तिरुपति और इसके आस-पास के क्षेत्रों को एक विशेष जैव-विविधता के रूप में संरक्षित करने के प्रयास किए जाने चाहिए।

12) विभिन्न सेवाएँ, सत्संग, भजन मंडली, अन्य टीम प्रणालियों को मजबूत करना

2007 और 2008 वर्ष में आयोजित धार्मिक सम्मेलनों के प्रस्तावों के बाद, सम्मेलन में हरिजन, आदिवासी, मत्स्कार वालों को बीच में रोकने के लिए चल रही सभी योजनाओं को फिर से मजबूत करने का निर्णय लिया।

13) जनशक्ति निर्माण

सम्मेलन ने निष्कर्ष निकाला कि व्यक्ति में धर्म की रक्षा करने की क्षमता विकसित करने और उसका प्रचार करने में सक्षम होने के लिए अधिक से अधिक लोगों को प्रशिक्षित करना आवश्यक है।

14) आध्यात्मिक कार्यक्रम

जिस प्रकार मनुष्य के आत्मविश्वास के लिए शारीरिक शक्ति आवश्यक है, उसी प्रकार असफलताओं को झेलने के लिए मानसिक शक्ति भी आवश्यक है, इसलिए सम्मेलन ने हिंदू समाज में आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने का निर्णय लिया।

15) द्रविड वेद विकास के लिए प्रणालिया

सम्मेलन ने निष्कर्ष निकाला कि द्रविड़ वेद, जो ऋग्वेद आदि वेदों के कारण मानवता के कल्याण के लिए 12 आल्वारों द्वारा दिए गए थे, उन को भी उचित मान्यता और प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

16) पाठशाला छात्रों के लिए कार्यक्रम और सुझाव

सम्मेलन ने निष्कर्ष निकाला कि योजना में अधिक धर्म प्रचारकों की आवश्यकता है क्योंकि वर्तमान में विभिन्न पाठशालाओं में लागू पाठ्यक्रमों में हिंदू धर्म भोधन के लिए आवश्यक निर्णय लेना है।

17) भाषाओं की क्षमता - तेलुगु, संस्कृत

हिंदू धर्म से जुड़े सभी पहलू ज्यादातर तेलुगु और संस्कृत भाषा में हैं और इन दोनों भाषाओं का ज्ञान बाल-बच्चों और युवति-युवक के लिए जरूरी है और इन्हें समझना और अभ्यास करना चाहिए। सम्मेलन में निर्णय लिया गया कि इन दोनों भाषाओं को पढ़ाया जाना चाहिए।

18) सामाजिक मीडिया

आज के समाज में हर किसी तक पहुँचने के लिए सोशल-मीडिया जरूरी है, इसलिए सम्मेलन ने हिंदू धर्म को बढ़ावा देने के लिए मीडिया के सभी रूपों का भी उपयोग करने का निर्णय लिया।

19) सभी धार्मिक संस्थाएँ एकीकृत होना चाहिए, ऐसे धार्मिक सम्मेलनों के आयोजन में ति.ति.दे. को सहयोग करना चाहिए

हिंदू धर्म परिरक्षण में ऐसे सम्मेलन बहुत मेहनत करते है। तिरुमल, तिरुपति में वर्ष में एक बार आयोजित होना चाहिए। निर्दिष्ट समय में ग्रामीण और जिला स्तर तक धर्म परिरक्षण सभा को आयोजित होना चाहिए। सम्मेलन में निर्णय लिया गया कि इस सम्मेलन में लिए गए सभी प्रस्तावों को न केवल तिरुमल तिरुपति देवस्थान में, बल्कि हिंदू धर्म के संरक्षण के लिए सभी धर्मार्थ संस्थाओं में भी लागू किया जाना चाहिए।

ऋषि-मुनि

गुरु द्रोणाचार्य

- डॉ. जी. सुजाता

द्रोणाचार्य, ऋषि भरद्वाज तथा घृताची नामक अप्सरा के पुत्र तथा धनुर्विद्या में निपुण परशुराम के शिष्य थे। कुरू प्रदेश में पांडु के पाँचों पुत्र तथा धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों के वे गुरु थे। महाभारत युद्ध के समय वह कौरव पक्ष के सेनापति थे। गुरु द्रोणाचार्य ने ही संपूर्ण कौरव और पांडव वंश को अर्थशास्त्र का ज्ञान दिया था। वे न केवल एक श्रेष्ठ धनुर्धर बल्कि वेद पुराणों में भी पारंगत थे और एक कठोर तपस्वी भी थे।

द्रोण का जन्म :

गुरु द्रोण के जन्म की कथा बहुत रोचक है। उनका जन्म बहुत ही विचित्र तरीके से हुआ था। इनका जन्म किसी भी महिला के गर्भ में न हो कर द्रोण नामक एक यज्ञ पात्र से हुआ। इसीलिए इनका नाम उस बर्तन के नाम पर 'द्रोणाचार्य' रखा गया। कहा जाता है कि इनके पिता महर्षि भारद्वाज एक बार सुबह गंगा नदी में स्नान कर रहे थे तभी उन्होंने घृताची नामक एक अप्सरा को जल से निकलते हुए देखा। उस अप्सरा को देख कर उनके मन में काम वासना जागृत हुई और उनका वीर्य स्खलित हो गया। जिसे उन्होंने एक यज्ञ पात्र में रख दिया। इसी यज्ञ पात्र से द्रोण की उत्पत्ति हुई।

द्रोण ने अपने पिता के आश्रम में ही अस्त्रों, शस्त्रों का ज्ञान अर्जित किया। द्रोण के साथ प्रषत् नामक राजा के पुत्र द्रुपद भी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे तथा दोनों में प्रगाढ़ मैत्री हो गई। और बाद में द्रोण ने कौरवों और पांडवों को अस्त्रों, शस्त्रों की उच्च शिक्षा प्रदान की। इस प्रकार द्रोण 'गुरु द्रोणाचार्य' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

द्रोणाचार्य के गुरु :

द्रोणाचार्य के पिता महर्षि भारद्वाज के कई शिष्यों में से एक शिष्य अग्निवेश थे। उन्होंने द्रोणाचार्य को अस्त्र-शस्त्र की सभी तरह की शिक्षा दी। उन्हीं दिनों परशुराम अपनी समस्त सम्पत्ति को ब्राह्मणों में दान कर के महेन्द्राचल पर्वत पर तप कर रहे थे। एक बार द्रोण उनके पास पहुँचे और उनसे दान देने का अनुरोध किया। इस पर परशुराम बोले, "वत्स! तुम विलम्ब से आये हो, मैंने तो अपना सब कुछ पहले से ही ब्राह्मणों को दान में दे डाला है। अब मेरे पास केवल अस्त्र-शस्त्र ही शेष बचे हैं। तुम चाहो तो उन्हें दान में ले सकते हो।"

द्रोण ने कहा, "हे गुरुदेव! आपके अस्त्र-शस्त्र प्राप्त कर के मुझे अत्यधिक प्रसन्नता होगी, किन्तु आपको मुझे इन अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा-दीक्षा देनी होगी तथा विधि-विधान भी बताना होगा।" अतः उन्होंने अपने समस्त अस्त्र-शस्त्र द्रोण को दे दिये तथा उनके प्रयोग तथा उपसंहार की विधि भी प्रदान कर दी। द्रोणाचार्य ने श्री परशुराम जी से सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया।

विवाहित जीवन :

युद्ध कला, सभी प्रकार के शस्त्र विद्या तथा चारों वेदों का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात

द्रोणाचार्य ने कृपाचार्य की बहन कृपि से विवाह कर लिए। कुछ समय पश्चात इन्हें पुत्र के रूप में एक संतान प्राप्त हुआ। उन्होंने पुत्र का नाम अश्वत्थामा रखा। उनका प्रारंभिक जीवन गरीबी में गुजरा। एक दिन द्रोण ने पत्नि को पानी में चावल का आटा घोल कर दूध की जगह बच्चे को पिलाते देखा तो उनकी आत्मा कांप गई। इसलिए वे अपने बचपन के मित्र द्रुपद से सहायता मांगने पांचाल गए। द्रुपद उस समय पांचाल के राजा बन गए थे। द्वारपाल ने महाराज द्रुपद को सूचना दी, द्रोण नामक एक ब्राह्मण आपसे मिलना चाहते हैं वे खुद को आपका मित्र बता रहे हैं। महराज द्रुपद ने उन्हें दरबार में आने की अनुमति दे दी। जब द्रुपद ने द्रोण देखा तो वे उन्हें पहचानने से इनकार कर दिए और उनका उपहास उड़ाया। उन्होंने कहा कि मित्रता बराबर वालों में होती है। दरबार में उपस्थित अन्य मंत्रीगण भी द्रोण की दरिद्रता पर हसने लगे। फिर द्रुपद ने द्रोण के आने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि मैं आपसे दान मांगने के उद्देश्य से आया हूँ। परंतु द्रुपद ने दान देने भी मना कर दिए और कहा कि यदि तुम्हें दान ही मांगना था तो याचक की भांति आते परंतु तुमने स्वयं को मेरा मित्र बताकर मेरे ही दरबार में मुझे लज्ज़ित किया इसलिए मैं तुम्हें कोई दान नहीं दूंगा। द्रोण ने द्रुपद से आग्रह किया कि वे केवल एक गाय दान में चाहते हैं परंतु महराज द्रुपद इसके भी तैयार नहीं हुए। द्रोण को अपमानित होकर खाली हाथ ही लौटना पड़ा।

कौरव और पांडवों के गुरु बने द्रोणाचार्य :

एक बार वन में भ्रमण करते हुए द्रोण कही जा रहे थे तभी उन्होंने देखा की कौरवों-पांडवों की गेंद कुएँ में गिर गई। इसे देखकर द्रोणाचार्य ने अपने धनुर्विद्या की कुशलता से उसको बाहर निकाल लिया। इस अद्‌भुत प्रयोग के विषय में तथा द्रोण के प्रकाण्ड पण्डित होने के विषय ज्ञात होने पर भीष्म पितामह ने उन्हें राजकुमारों के उच्च शिक्षा के लिए नियुक्त कर राजाश्रय में ले लिया और वे द्रोणाचार्य के नाम से विख्यात हुये।

कहा जाता है कि एक बार गुरु द्रोणाचार्य गंगा नदी में स्नान कर रहे थे कि तभी एक मगरमच्छ आकर उनके पैरों को पकड़ लिया। हालांकि द्रोणाचार्य मगरमच्छ से खुद बच सकते थे लेकिन वे अपने शिष्यों की परीक्षा लेना चाहते थे। उस समय सभी कौरव-पांडव शिष्य उनके समक्ष खड़े थे। सभी लोग मगरमच्छ को देखकर घबरा गए। लेकिन उसी क्षण अर्जुन ने अपने बाणों से मगरमच्छ को मार दिया और अपने वीरता का परिचय दिया। यह देख ऋषि द्रोण बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अर्जुन को पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर होने का वरदान दिया।

अश्वत्थामा की शिक्षा कौरव और पांडवों के साथ ही हुई। लेकिन गुरु द्रोणाचार्य अपने पुत्र प्रेम में अश्वत्थामा को शिक्षा प्राप्त करने के लिए ज्यादा जोर नहीं दिया करते थे। जहाँ कौरवों और पांडवों को हर दिन आश्रम में दूर से मटके से पानी भरकर लाने के लिए कहते थे और जो जल्दी पानी भर कर लाएगा, उसे वह ब्रह्मास्त्र का ज्ञान देंगे। वहीं अपने पुत्र अश्वत्थामा को छोटा मटका दिया करते थे। हालांकि अर्जुन इस बात को समझ गए थे, जिसके कारण वे हमेशा ही जल्दी पहुँचने की कोशिश करते थे। एक दिन अश्वत्थामा और अर्जुन दोनों एक साथ मटके में पानी भरके गुरु द्रोणाचार्य के पास पहुँचे। इसके बाद गुरु द्रोणाचार्य ने दोनों को ब्रह्मास्त्र का ज्ञान दिया। लेकिन अर्जुन ने पूरे तरीके से ब्रह्मास्त्र के प्रयोग करने की विधि सीख ली लेकिन अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र को आमंत्रित करना तो सीखा लेकिन वापस भेजना नहीं सीखा। उन्होंने सोचा कि उनके पिता गुरु है तो बाद में वे इस विद्या को सीख सकते हैं। लेकिन गुरु द्रोणाचार्य ने कभी उन पर इस विद्या को सीखने का जोर नहीं दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि अश्वत्थामा कभी ब्रह्मास्त्र के प्रयोग की पूरी विधि नहीं सीख पाए, जिसके कारण महाभारत के युद्ध में अर्जुन और अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र निकाला। लेकिन श्रीकृष्ण के समझाने पर अर्जुन ने तो ब्रह्मास्त्र वापस ले लिया। लेकिन अश्वत्थामा को ब्रह्मास्त्र वापस लेना नहीं आता था, जिसके कारण

भगवान श्रीकृष्ण अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र को नष्ट कर दिया और अश्वत्थामा के माथे पर लगी मणी निकालकर उन्हें हमेशा के लिए भटकने का श्राप दे दिया।

द्रुपद से द्रोण का प्रतिशोध :

द्रुपद के दरबार में अपने अपमान का दर्द द्रोणाचार्य की छाती पर वर्षों तक सुलगता रहा इसलिए जब पांडवों की शिक्षा पूरी हुई तब गुरुदक्षिणा मांगते समय उनसे कहा मेरी एक ही गुरुदक्षिणा है पांचाल देश के घमंडी राजा द्रुपद को बाँधकर जीवित अवस्था में मेरे सामने लाकर खड़ा कर दो वही मेरी गुरुदक्षिणा होगी। तब अर्जुन ने गुरुदेव को वचन दिया की मैं द्रुपद को युद्ध में पराजित करके उसे बंदी बनाकर आपके कदमो में डाल दूंगा और यदि मैं ऐसा न कर सका तो अपना धनुष तोड़कर आपके चरणों में रख दूंगा और जीवन भर कभी धनुष नहीं उठाऊंगा।

अर्जुन और द्रुपद के बीच बहुत भीषण युद्ध हुआ। द्रुपद स्वयं अर्जुन की वीरता देखकर उसकी प्रसंशा कर रहे थे। अंत में अर्जुन उन्हें पराजित करके बंदी बना ले गए और गुरु द्रोण के सम्मुख खड़ा कर दिया। फिर गुरु द्रोण ने द्रुपद से कहा अब तुम्हारे राज्य पर मेरा कब्जा है अतः पांचाल राज्य मेरा हुआ। तुमने कहा था कि मित्रता बराबर वालों में होती है इसलिए मैं तुम्हारा आधा राज्य वापस करता हूँ। मुझे राज्य से ज्यादा तुम्हारी मित्रता प्यारी है। इस प्रकार द्रोणाचार्य द्रुपद से अपने अपमान का प्रतिशोध ले लिया।

गुरुदक्षिण :

गुरु द्रोणाचार्य के अन्य शिष्यों में एकलव्य का नाम उल्लेखनीय है। निषाद बालक एकलव्य जो कि अद्भुत धनुर्धर बन गया था। वह द्रोणाचार्य को अपना इष्ट गुरु मानता था और उनकी मूर्ति बनाकर उसके सामने अभ्यास कर धनुर्विद्या में पारंगत हो गया था अर्जुन के समकक्ष कोई ना हो जाए इस कारण द्रोणाचार्य ने एकलव्य से गुरु दक्षिण के रूप में दाहिने हाथ का अँगूठा माँग लिया। एकलव्य ने हँसते हँसते अंगूठा दे दिया। द्रोणाचार्य ने कर्ण की प्रतिभा को पहचान लिया था और उसे भी सूतपुत्र बता शिक्षा देने से मनाकर दिया था।

गुरु द्रोणाचार्य की मृत्यु :

लेकिन राजा द्रुपद अपने प्रजा के सामने मुंह दिखाने लायक नहीं रह गए। जिसके बाद उनके मन में भी द्रोणाचार्य से बदला लेने की भावना उत्पन्न हुई। लेकिन गुरु द्रोणाचार्य के साथ कुरु देश के वंशावली का साथ होने के कारण अकेले गुरु द्रोणाचार्य को हराने में द्रुपद सक्षम नहीं थे।

जिसके बाद उन्होंने गुरु द्रोणाचार्य का काट ढूंढने के लिए यज्ञ करवाया और इस यज्ञ के अग्नि से ही धृष्टद्युम्न नामक एक बालक का जन्म हुआ। बाद में आगे चलकर महाभारत युद्ध में गुरु द्रोणाचार्य कौरवों की तरफ से लड़ रहे थे और द्रुपद पांडवों की तरफ से लड़ रहे थे। इस युद्ध में युधिष्ठर के आधे झूठ के कारण द्रोण ने अपने सभी शस्त्र त्याग दिए तथा युद्धभूमी पर ही ध्यानमग्न हो गये तभी द्रुपद के बेटे धृष्टद्युम्न ने गुरु द्रोणाचार्य के सिर को धड़ से अलग कर उनकी हत्या कर दी।

द्रोणाचार्य पुरस्कार :

द्रोणाचार्य पुरस्कार को ऐतिहासिक 'द्रोण' के नाम पर रखा गया है जिन्होंने कौरव और पांडव को युद्धनीति सिखाई थी। यह नीति उन्होंने महाभारत के समय अपने शिष्यों को सिखाई ताकि वह अपनी हर मुश्किल का सामना कर सकें।

यह पुरस्कार 1985 में प्रारंभ किया गया था। यह पुरस्कार खिलाड़ियों और टीमों को प्रशिक्षण प्रदान करने में उत्कृष्ट कार्य करने वाले जाने माने खेल प्रशिक्षकों को प्रदान किये जाते हैं। द्रोणाचार्य पुरस्कार के अंतर्गत गुरु द्रोणाचार्य की प्रतिमा, प्रमाणपत्र, पारंपरिक पोशाक और पाँच लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाता है। हर साल अधिकतम 5 खिलाड़ियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

मिथ की महिला चरित

उत्तरा

- डॉ.के.एम.भवानी

वेदव्यास से रचित महाभारत में कई पात्र भारतीयों के जीभों पर जीवन के विभिन्न संदर्भों में नाचते रहते हैं। वीरता के लिए अर्जुन, दान के लिए कर्ण जैसे पुरुष पात्रों के साथ-साथ सहनशीलता और भक्ति के लिए कुंती, पांचाली के नाम से द्रौपदी जैसे नामों को हर पल भारतीय जनता याद करते ही रहते हैं। उनके जैसे यादगार नहीं होने पर भी कुछ ऐसे पात्र भी हैं जिन्हें हम कभी भूल नहीं पाते हैं। ऐसा एक पात्र है उत्तरा जिसकी निर्मल और स्वच्छ भक्ति ने पांडव वंश परंपरा को आगे बढ़ाया। उत्तरा महावीर अभिमन्यु की पत्नी और राजा परीक्षित की माता है।

उत्तरा विराट नगर के राजा विराट और रानी सुधेष्णा की पुत्री है। युवराज उत्तर कुमार की बहन है। जब पांडव अज्ञातवास बिताने के लिए विराट नगर में प्रवेश करते हैं तब महावीर अर्जुन क्लीव बनकर बृहन्नला के नाम से (जो अर्जुन को ऊर्वशी के शाप के कारण मिला था) राजा विराट के दरबार में आता है और कहता है कि वह शाप वश क्लीव बनने के कारण कोई काम नहीं कर सकता है इसलिए बचपन से नृत्य जैसे कलाओं के सीख चुका है। अंतःपुर की राज कन्याओं को नृत्य सिखाने में वह कुशल है।

तो राजा विराट राज कुमारी उत्तरा को नृत्य सिखाने की जिम्मेदारी बृहन्नला को सौंपता है। उस समय राजा विराट उत्तरा को राज दरबार में बुलाकर बृहन्नला से उत्तरा का परिचय करने हेतु उत्तरा के बारे में बृहन्नला से इस प्रकार कहता है - ''उत्तरा को खेलों से बहुत लगाव है। हमेशा सखियों से खेलती हुई शरारत करती रहती है। अनुशासन नाममात्र को भी नहीं मालूम है। इसलिए अब से तुम इसकी नजर को खेलों से नृत्य की तरफ बदलो। नृत्य में कुशल बनाओ। अब से उत्तरा की जिम्मेदारी तुम्हें निभाना है।'' उत्तरा से भी राजा विराट ने कहा-

''उत्तरा! आज से यह तुम्हारा गुरु है। उसकी कहने के अनुसार अच्छी तरीखे से नृत्य सीखो। हमेशा गुरु की बातों को इज्ज़त दो। हमारी परंपरा के अनुसार आहार, फल, फूल आदि देते हुए बिना किसी कमी के बिना उसका सम्मान करो। आज से यह बृहन्नला ही तुम्हारी माता, पिता, गुरु और भगवान भी है। उसकी कहने के अनुसार चलती हुई उससे विनय और बुद्धि से बर्ताव करो।''

जब अज्ञातवास का समय बीत जाता है तो पांडव अपने निज वेश में आ जाते हैं, तब राजा विराट पांडवों के प्रति सम्मान दिखाते हुए युधिष्ठिर से कहता है कि वह पांडवों से रिश्ता जोड़ना चाहता है इसलिए अपनी पुत्री उत्तरा की शादी अर्जुन से करना चाहता है। लेकिन यह बात सुनते ही अर्जुन कहता है कि वह कभी भी उत्तरा को ऐसी नजर से नहीं देखा। वह उसका गुरु होने के कारण उसे पुत्री की नजर से ही देखा है इसलिए वह उत्तरा को उसका पुत्र अभिमन्यु की वधू के रूप में स्वीकार करना चाहता है। विराट भी खुशी से इस प्रस्ताव को स्वीकार करता है। विराट नगर में उत्तरा और अभिमन्यु की शादी बहुत धूम-धाम से मनाई जाती है।

कुरुक्षेत्र युद्ध के अंतिम समय में अश्वत्थामा के द्वारा निर्दयता से सोते हुए उप पांडव मारे जाने के बाद पांडव वंश अंत होनेवाला था। सिर्फ उनका आशा दीप प्रज्वलित रहा तो उत्तरा के कारण क्योंकि तब वह गर्भवती है। अभिमन्यु का वारिस उसके गर्भ में है लेकिन अश्वत्थामा मरते हुए दुर्योधन को शांति दिलाने के लिए पांडव वंश नाश का मंत्र पठन करके

ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करता है तो वह अस्त्र उत्तरा के गर्भस्थ शिशु को भी मारने को तैयार हो जाता है। तब भय विह्वल होकर उत्तरा भगवान श्रीकृष्ण के पास आकर पांडव वंशाकुर की रक्षा करने की प्रार्थना करती है। तब श्रीकृष्ण अपने चक्रायुध को भेज कर उस गर्भस्थ शिशु को बचाया। इस तरह जन्म से पहले ही भगवान से बचाया गया वह बालक बाद में परीक्षित नाम से बुलाया गया और पांडव वंश को आगे बढ़ाया।

तेलुगु भाषा के महान भक्त और सहज कवि पोतना ने अपने भागवत में (वह वेदव्यास से संस्कृत में लिखा गया भागवत को तेलुगु में अनुवाद किया था) उत्तरा को होशियार कहा क्योंकि जब अश्वत्थामा से छोड़ा गया बाण उसके गर्भ विच्छेद करने आ रहा था, तब उत्तरा गर्भस्थ शिशु को बचाने के लिए न महान वीर अर्जुन (जो अभिमन्यु के पिता भी है) और भीम या धर्मज्ञ युधिष्ठिर के पास गई, वह इतने सारे लोगों के सामने रोती हुई आकर श्रीकृष्ण से रक्षा करने की विनती की। उसे मालूम था कि तब सिर्फ भगवान श्रीकृष्ण ही उसे बचा सकता है और कोई नहीं। वह कृष्ण के पास आकर उससे अपने रिश्ते को याद दिलाती हुई कहती है कि हे कृष्ण! मैं तुम्हारी बहन की बहू हूँ। तेरा भतीजा युद्ध में वीर गति को प्राप्त किया है अब उसका वारिस को तुम्ही बचा सकते हो। इस प्रकार असहाय स्थिति में उत्तरा भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना करने के कारण श्रीकृष्ण बहुत प्रसन्न होकर उत्तरा के गर्भस्थ शिशु को बचाया।

जय माता की।

❀❀❀

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- ❖ अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- ❖ भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- ❖ दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- ❖ मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- ❖ तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- ❖ पानी और बिजली को वृथा न करें।
- ❖ अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- ❖ पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- ❖ चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- ❖ भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- ❖ फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- ❖ तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- ❖ सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- ❖ विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

(आयुर्वेद)

सरसों के बीज का आयुर्वेदिक दृष्टिकोण

- डॉ.सुमा जोषि

प्राचीन आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा से लेकर आधुनिक समय तक पूरे इतिहास में इस अद्भुत मसाले का उपयोग किया जाता रहा है। सरसों के बीज छोटे और गोल बीज होते हैं। वे अक्सर पीले, भूरे या काले रंग के होते हैं। सरसों की लगभग 40 विभिन्न प्रजातियाँ हैं, उनमें से कई जंगली हैं और कुछ मसाले के रूप में उपयोग के लिए उगाई जाती हैं। जंगली सरसों को पहचानना और हमारे चारों ओर उगाना आसान है।

भारतीयों की रसोई में सरसों के बीज का उपयोग आम बात है। गर्म घी या तेल में तल लेने के कुछ क्षणों के बाद वे पॉपकॉर्न की तरह फूटने लगेंगे। बीजों को भूनने के से एक सुखद कुरकुरापन और अधिक सूक्ष्म, अधिक पौष्टिक स्वाद मिलता है। सुगन्ध तेल में घुलने के कारण पूरे व्यञ्जन में चटपटी सरसों की सुगन्ध आ जाती है। हालाँकि, सावधान रहें कि उन्हें ज्यादा न पकाँए। जलने पर सरसों के बीज कडवे हो जाते हैं। बीजों को खाद्य पदार्थों पर गार्निश के रूप में छिडका जा सकता है।

सरसों के वैज्ञानिक नाम (प्रभंद) :

1) सफेद सरसों, पीला सरसों - Sinapis alba.

2) काले सरसों - Brassica nigro L.koch.

3) सर्षप - भारतीय सरसों - Brassica Juncea L.Czern. et Cosson.

4) कुल (Family) - Cruciferae.

गुणधर्म :

1) गुण - हलका, चिपचिपा।

2) स्वाद (रस) - तीखा और कडवा।

3) विपाक - पचन के बाद तीखा स्वाद बचता है।

4) वीर्य - उष्ण।

5) कफ और वात दोष को समतोलन में रखता है और पित्त दोष को बढ़ाता है।

सरसों के बीज प्रोटीन, तेल, कार्बोहाइड्रेट और सूक्ष्म पोषक तत्वों से बने होते हैं। पीली सरसों की तुलना में भूरी और ओरिएंटल सरसों में प्रोटीन की मात्रा थोडी कम और तेल की मात्रा अधिक होती है।

सरसों का प्रयोग :

सरदर्द और दान्तदर्द के लिए : कर्नाटक में सरसों को थोडा पानी डालकर चटनी बनाकर माथे पर लगाना चाहिए अगर मसूडों में दर्द रहा तो नमक के साथ पीसकर कुछ समय के लिए रखना है। सरसों के बीज को निम्बु के रस डालके चटनी बनानी है। Tonsilitis में, इस लेप गले पर (बाहरी हिस्सा) लगाना है। सामान्यतः 3-4 दिन में कम हो जाता है। सरसों के बीज को गरम करके, पाउडर बनाना है। इसे तिल के तेल के साथ मिक्स करके रखना है। यह मिश्रण अल्सर और ठीक न होने वाले घावों पर लगाने से लाभ मिलता है।

सरसों के तेल को नमक के साथ मिश्रण करना है और थोडा गरम करना है। ठण्डा होने पर छान लें। 2-3 बून्द, यह मिश्रण नाक में डालने से नाक के पॉलिप में सहायक है। सरसों के तेल को हल्दी के साथ मिश्रण करके थोडा गरम करना है। यह मिश्रम, सुजलीदार त्वचा पर

लगाने से लाभदायी है। सरसों के बीज+कालिमिर्च - दोनों को समप्रमाण में लेना है और एक पोट्टली (कपडे) में बान्धना है। जिस व्यक्ति बार-बार सर्दि, खासी, Tonsilitis, यण्ड की बिमारी होती है (सामान्यतः छोठे बच्चों में), उनको सुबह जल्दी या फिर देर शाम को, खोपडी के मध्य 30-45 मिनिट के लिए बान्धना है। इससे ये समस्यायें कम हो जाति हैं।

सरसों के तेल को थोडा नमक डालकर गरम करके रखना है। इस मेल को नियमित रूप से संधियों पर लगाने से रूमाटाइड गठिया (Rheumetoid arthrities) में लाभदायी है। सरसों का पूरा पौधा or पत्तों को थोडा हल्दी+थोडा लशुन डालकर चटनी बनानी चाहिए। यह चटनी को थोडा गरम करना चाहिए। इस गरम किये हुए लेप को सूजन या गैर-दमनकारी फोडे पर लगाना चाहिए। यह फोडे को परिपक्व होने में मदद करता है और सूजन को कम करता है। सरसों के बीज+लशुन+लोंग को समप्रमाण में लेना चाहिए। इनका बारीक पेस्ट बनाना चाहिए। इसे घर्षणवाले घावों या कुचले हुए घावों पर लगाया जाता है। यह दर्द और सूजन से राहत देता है।

सरसों के बीज को बारीक पीस लेना चाहिए। थोडा गर्म कर लेना चाहिए। 1-2 चुटकी मधु के साथ लेना चाहिए। यह मिश्रण सर्दि, खासी के लिए प्रयोजनकारी है। पक्षाघात में, सरसों का पेस्ट रक्त सञ्चलन में सुधार लाता है और गर्म रखता है। चर्मविकार, जहाँ पर खुजली और दर्द है, वहाँ पर सरसों का पेस्ट मिनट 5-10 मिनट तक लगाकर निकालना चाहिए। ऐसा नहीं है तो एक कपडे को इसका पेस्ट लगाकर उस जगह पर लपेटना चाहिए। ऐसा करते समय अगर जलने का कुछ अनुभव हुआ तो, उसे निकालना चाहिए। 2015 में किये गए एक शोध अध्ययन से पता चला है कि सरसों के बीज में कैरोटीन और फेनोलिक यौगिक मधुमेह के लिए फायदेमन्द हो सकता है। 2020 में किये गये एक शोध अध्ययन से पता चला है कि सरसों के बीज का उपयोग फेफडों के कैंसर के लिए किया जा सकता है। इस दिशा में अधिक शोध की अवश्यकता है। जब आप थोडी सी राई चबाकर खाते हैं तो इससे दिल स्वस्थ रहता है। इससे धमनियाँ चौडी होती हैं, उनमें कोई रुकावट नहीं होती। दिल की बीमारियों जैसे हार्ट अटैक, कार्डियक अरेस्ट का खतरा भी कम हो जाता है।

सरसों के बीज में कुछ ऐसे गुण होते हैं जो तंत्रिकाओं को शान्त करते हैं। यह तान्त्रिका तन्त्र को ठीक करने के साथ-साथ नसों को भी सक्रिय बनाता है। अगर सर्दि-जुकाम हो तो इन बीजों को चबाकर खाएं। यह छाती में कफ के कारण होनेवाले जमाव को कम करता है। सरसों के बीज खांसी, सर्दी, फ्लू, गले में खराश जैसी समस्याओं को ठीक करते हैं।

सरसों से नुकसान - सरसों के दुष्प्रभाव

अगर सरसों का प्रयोग सीमित मात्र में किया जाए तो फायदे अनेक हैं। वहीं वैज्ञानिक तथ्यों को नजर अन्दाज कर प्रयोग किया जाए तो सेहत के लिए हानिकारक हो सकती है। इसके दुष्प्रभाव कुछ इस प्रकार हैं। त्वचा पर लम्बे समय तक सरसों लगाने से जलन की समस्या भी हो सकती है। विटामिन-ई की खुराक के अत्यधिक सेवन से मस्तिष्क में रक्तस्राव का खतरा भी बढ़ सकता है। वहीं, सरसों के बीज में विटामिन-ई भरपूर मात्रा में होता है। इस प्रकार भोजन से प्राप्त विटामिन-ई का कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड सकता है, लेकिन फिर भी एहतियात के तौर पर इसका सेवन संतुलित मात्रा में ही करें।

सरसों के तेल में Erucic acid की मात्रा मौजूद होती है, जिसके अधिक सेवन से लिपोलिसिस की समस्या हो जाती है, जो हृदय रोगों का मुख्य कारण बन सकता है। इस कारण से अधिक मात्रा में सरसों के तेल का सेवन करना सुरक्षित नहीं है। जानवरों पर किए गए कई प्रयोगों में यह बात साबित हो चुकी है कि सरसों के ज्यादा उपयोग से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने की बजाय कम हो सकती है। ज्यादा उपयोग से अस्थ्मा, सर्दि, त्वचा की निचली परत में सूजन, मुँह में खुजली-ऐसे अनेक समस्यायें हो सकती है। ज्यादा प्रयोग से अमृत भी विष बन सकता है। इसलिए सावधानी से प्रयोग करें, स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।

❀❀❀

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - आचार्य के.रामसूर्यनारायण
अनुवाद - श्री अवधेष कुमार शर्मा

द्वात्रिंशः पाठः - बाईसवाँ पाठ

तस्मै = उसके लिए	तस्मात् = उससे	तेभ्यः = उनसे	त्वत् = तुम
मत् = मेरे से	भवतु नाम = चलो ठीक हैं।	चलितुम् = चलने के लिए	कारयति = करवाता हैं।
भूत्वा = होकर के	भवितुम् = होने के लिए	चलित्वा = चलकर	उषित्वा = बैठकर
वस्तुम् = वस्तु को	अस्तु नाम = ठीक हैं।	यच्छति = चाहता है।	दास्यति = देता हैं।

प्रश्न : (अ)

1. अहं मर्कटाय अन्नं यच्छामि।
2. त्वं तस्मै पानीयं दास्यसि किम्?
3. क्षीरं कुत्रास्ति वा?
4. बालकेभ्यः अद्य प्रातः क्षीरं कः दास्यति?
5. त्वं शीघ्रं गत्वा मम जनकं स्नानं कारय।
6. त्वं न चेत् कः कारयिष्यति?
7. गृहात् बहिः अनेके ब्राह्मणाः सन्ति।
8. तेभ्यः सर्वेभ्यः भोजनं यच्छ।
9. तव जनकाय एतत्(इद) फलं यच्छतु।
10. अस्तु नाम कः यच्छति चेत्किम्?
11. तथैव भवतु।
12. अहम् अद्यैव खलु फलम् अयच्छम्।

जवाब : (अ)

1. मैं बंदर के लिए अन्न देता हूँ।
2. तुम उसके लिए पीने का पानी दोगे क्या?
3. दूध कहीं हैं, क्या?
4. बालकों के लिए आज प्रातःकाल दूध कौन देगा।
5. तुम शीघ्र जाकर मेरे पिता को स्नान करवाना।
6. तुम नहीं तो कौन करायेगा।
7. घर से बाहर बहुत ब्राह्मण हैं।
8. उन सभी के लिए भोजन दो। (दे)
9. तेरे पिता के लिए यह फल दो (दे)।
10. ठीक है, चलो कौन देगा तो क्या?।
11. उसी प्रकार हो।
12. मैं (मैने) आज ही तो फल दिया।

प्रश्न : (आ)

1. बंदर पर्वतों पर जा रहे हैं।
2. बहुत सारे बंदर पेड़ों से गिर गयें।
3. तुम सब हमारे साथ कभी भी युद्ध नही करेंगे।
4. हम सब तुम्हारे साथ कभी भी युद्ध नही करेंगे।
5. तुम सब ही हमारे साथ युद्ध करने के लिए आये थे।
6. वे कोई भी यहाँ नही हैं।
7. उस पर्वत पर कितने बंदर है।
8. कौन देखा था?
9. अरे! तुम बिल्ली के लिए दूध दीजिए।
10. आज मुझे गाँव जाना है, जल्दी से भोजन कराइये।
11. तुम सब पहले जल लेकर आयेंगे तो मैं पकाऊँगा। (भोजन)
12. उन ब्राह्मण को ''जल लाओ'' ऐसा तुम दोनों बोलो।

जवाब : (आ)

1. मर्कटाः पर्वतेषु गच्छन्ति।
2. बहवः मर्कटाः वृक्षेभ्यः अपतन्
3. यूयम् अस्माभिः सहः कदापि युद्धं न करिष्यथ?
4. वयं युष्माभिः सह कदापि युद्धं न करिष्यामः।
5. यूयमेव अस्माभिः सह युद्धं कर्तुम् आगच्छथ।
6. ते केपि अत्र न सन्ति।
7. तस्मिन् पर्वते कति मर्कटाः सन्ति।
8. कः दृष्टवान्?
9. अहो! (मो) त्वं मार्जालाय क्षीरं ददसि।
10. अद्य मया ग्रामं गन्तव्यं शीघ्रं पाकं कारयतु।
11. यूयं प्रथमं जलम् आनयथः चेत् अहं पाकं कारयिष्यामि।
12. तान् ब्राह्मणान् 'जलम् आनरान्तु'' इति युवां वदतः।

मार्च महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

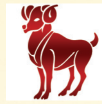

मेष राशि - दैनन्दिन जीवन की नियमितता के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कार्य में सफलता, धार्मिक-सामाजिक कार्यों में विकास, आर्थिक लाभ, गृह-भूमि लाभ, कृषि कार्यों में प्रगति। व्यापार में सफलता। मास मध्य में व्यय अधिक, पारिश्रमिक सफलता, शिक्षा क्षेत्र में अवरोध, पारिवारिक सुख, गृहस्थ जीवन सौहार्द्र पूर्ण रहेगा।

वृषभ राशि - स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, अन्न-वस्त्र-द्रव्यादि का लाभ, कार्यों में तत्परता, नौकरी में परिवर्तन, कौटुम्बिक विकास, अध्ययन-अध्यापन में रुचि। रोजी-रोजगार, व्यापार में अनुकूलता, प्रतियोगी क्षेत्रों में सफलता, यात्रा कष्ट, शत्रु विजय। उत्तरार्ध में समय अनुकूल, धन सम्पत्ति लाभ।

मिथुन राशि - शरीर स्वस्थ रहने के कारण मन प्रसन्न रहेगा। व्यापार में सफलता परन्तु आर्थिक परेशानी, सामयिक-सामाजिक विकास, धर्म-कर्म, आध्यात्मिक कार्यों के प्रति श्रद्धा बनी रहेगी। यात्रा सुखद रहेगी, गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा में वृद्धि।

कर्काटक राशि - अनावश्यक परेशानियों के कारण स्वास्थ्य बाधा, लोगों से मनमुटाव, तनाव, वाद-विवाद की स्थिति बनी रहेगी। कार्यों में सफलता, अपने वाणी व्यवहार पर नियन्त्रण रखे नहीं तो अपने से उच्चाधिकारियों के साथ वाद-विवाद, प्रतिष्ठा में कमी।

सिंह राशि - यह माह आपके लिए मध्यम फलदायक रहेगा। विवादों के कारण उलझन, कार्यों में सामान्य सफलता, अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करने में कठिनाई, वायु विकार, ज्वरादि से कष्ट एवं परेशानि, व्यापार क्षेत्रों में प्रगति।

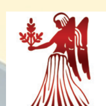

कन्या राशि - यह माह आपको मिला जुला प्रभाव दिखेगा, सुख-दुःख दोनों का अनुभव होगा, कार्यों में पारिश्रमिक लाभ, अपनों कि चिन्ता, मित्रों का असहयोग, संतान सुख, यत्र तत्र यात्रा न करे कष्टप्रद रहेगा। पारिवारिक कलह, माता-पिता की चिन्ता, छात्रों को परिश्रम करने से सफलता। शैक्षणिक प्रगति।

तुला राशि - दिनचर्या नियमित होने से स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, आर्थिक समुन्नति, विद्या बुद्धि का विकास, व्यापार क्षेत्रों में लाभ, वाहन-भूमि लाभ, सामाजिक-धार्मिक कार्यों में रुचि, संलग्नता। अपनों का सहयोग, आर्थिक समुन्नति, विशिष्टजनों से सम्पर्क।

वृश्चिक राशि - आरोग्य सुख, रचनात्मक कार्यों के प्रति रुचि, पराक्रम, धैर्य, विवेकशीलता की वृद्धि, एकाधिक श्रोतों से धनलाभ, निर्माणकार्यों में अनुकूलता। संवाद से हर्ष, संतान पक्ष की चिन्ता, उद्योग-धन्धें, व्यापार में सफलता। शैक्षणिक विकास, छात्रों के लिए समय उत्तम रहेगा, कुटुम्बों में मांगलिक कार्य जिसके कारण यात्रा योग बन रहा है।

धनुष राशि - यह माह आपके लिए प्रसन्नता दायक रहेगा, स्वास्थ्य उत्तम, हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण, व्यावहारिक जीवन में कठोरता, इष्ट-मित्र-स्त्री-संतान कुटुम्ब में प्रसन्नता, अभीष्टकार्य सिद्धि, छात्रों के लिए अनुकूल समय, व्यापारिक विस्तार, उत्तरार्ध में अपेक्षाओं की पूर्ति, सामाजिक कार्यों का विकास, शक्ति संवर्धन।

मकर राशि - आपके मन और विचार में नवीनता उत्पन्न होंगे, नवीन कार्य सम्पादन होगा जिससे मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, यश-प्रभाव प्राप्त होंगे। राजकार्य में प्रगति, सट्टा-लाटरी से लाभ, अपनों का सहयोग, मित्रों का साथ, अनेकानेक प्रकार से धनागम, सांसारिक-पारिवारिक सुख, गृहस्थ सुख, संतान सुख।

कुंभ राशि - यह माह आपके लिए मध्य सिद्ध होगा। शारीरिक-मानसिक व्यथा रहेगी, यत्र तत्र यात्रा के कारण मन खिन्न रहेगा। नौकरी-व्यवसाय में सामान्य स्थिति बनी रहेगी, कौटुम्बिक सुख, विद्या-बुद्धि का विकास, अनेक लाभ के अवसर मिलेंगे।

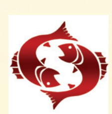

मीन राशि - स्वास्थ्य चिंता, आर्थिक संतुलन, पारिवारिक उत्तरदायित्व का निर्वहन में सहजता, श्रमसाध्य सफलता, सामाजिक-राजनीतिक लोगों को आप से परेशानी। रोजी-रोजगार की चिन्ता, उत्तरार्ध में ग्रह स्थान परिवर्तन होने के कारण सकारात्मक बदलाव, विविध परेशानियों से राहत, गृह-भूमि लाभ, व्यापार क्षेत्रों में प्रगति।

नीतिकथा

राजा शिबी सम्राट का त्याग

(जान भले ही जाए पर वचन न जाये)

- डॉ.शेक षावली

सुविशाल अखंड, परम-पवित्र भारत देश, त्यागशील महान पुरुषों का पुण्य क्षेत्र हैं। ऐसे देश में जन्म होना हमारा परम भाग्य है। कृतयुग से कलियुग तक, ऐसे अनेक महान दान वीरों ने, दिए हुए वचन के लिए अपने प्राणों की भी परवाह नहीं किया हैं। बहुत समय पहले की बात है, उशीनगर नामक राज्य के राजा शिबी सम्राट थे। वह अपनी महानता और दयालुता के कारण प्रसिद्ध था। जब इस बात का पता देवों के राजा इंद्र को चला, तो उन्होंने, उनकी परीक्षा लेने के लिए अग्निदेव कबूतर के रूप में आगे गए और इंद्र बाज के रूप में इस प्रकार उनके पीछे चले कि मानों एक बाज कबूतर का शिकार करने के लिए उसके पीछे उड़ रहा हो।

थोड़ी ही देर में अग्निदेव कबूतर के रूप में राजा शिबी के दरबार में पहुँचे और राजा शिबी की जांघ पर बैठ गए। उन्होंने राजा से कहा कि- हे राजन! ''मेरी जान बचाओ, मेरे पीछे एक बाज अपना शिकार करने के लिए आ रहा है,'' कबूतर की यह बात सुनकर राजा ने कहा- ''हे कबूतर! डरो मत। मैं तुम्हारी रक्षा करने का वचन देता हूँ।'' राजा के वचन देते ही, इंद्र देव भी शिबी के दरबार में बाज के रूप में पहुँच गए। उन्होंने राजा शिबी से कहा कि - हे सम्राट! ''वह कबूतर मेरा शिकार है। उसे मारकर मैं अपनी और अपने बच्चों की भूख मिटाना चाहता हूँ।'' राजा शिबी ने, इस बात को सुनकर, कुछ देर विचार करने के बाद, बाज से कहा- हे बाज! ''अगर मैं तुम्हें इस कबूतर के वजन के बराबर मांस दे दूँ, तो तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों की भूख मिट जाएगी। ऐसे में इस कबूतर के प्राण भी बच जायेंगे और मेरा वचन भी बना रहेगा।'' बाज ने कहा- ''महाराज! मैं तैयार हूँ, लेकिन आपको कबूतर के वजन का मांस अपने शरीर से देना होगा।''

''कबूतर का वजन कितना होगा? यह सोचकर राजा ने अपने एक दरबारी को एक तराजू लाने का आदेश दिया। दरबार में तराजू लाया गया। राजा ने तराजू के एक पलड़े पर कबूतर को रखा और एक चाकू से अपनी जांघ से एक टुकड़ा काट कर तराजू के दूसरे पलड़े पर रख दिया, लेकिन तराजू तनिक भी नहीं हिला। यह देखकर राजा ने एक और टुकड़ा काटकर तराजू पर रखा। उसके बाद भी मांस का टुकड़ा कबूतर के वजन से काफी कम था। यह देखकर राजा शिबी बहुत निराश हुए। उन्होंने निश्चय किया कि अब कुछ भी हो जाए, वह अपने वचन का मान रखते हुए कबूतर को बचाएंगे। यह सोचकर वह खुद ही तराजू के पलड़े पर बैठ गए और तराजू पर कबूतर का पलड़ा ऊपर आ गया। राजा ने बाज से कहा- ''तुम मेरे पूरे शरीर का मांस ले लो और कबूतर को छोड़ दो।''

यह सुनकर इंद्र देव को राजा पर दया आ गई। इंद्र और अग्निदेव अपने असली रूप में आए और कहा कि- ''हे दान वीर शिबी! हम आपकी परीक्षा लेने आए थे और आप इस परीक्षा में सफल रहे। आप हृदय से बहुत ही दयालु और परोपकारी हैं। इस पृथ्वी पर आपकी बराबरी दूसरा और कोई नहीं कर सकता।'' इतना कहते हुए दोनों देव वहाँ से गायब हो गए।

सीख : इंसान को किसी भी हाल में दया और परोपकार का साथ नहीं छोड़ना चाहिए, भगवान भी सदैव उसकी मदद के लिए तैयार रहते हैं।

चित्रकथा

कुबेर का गर्व भंग

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.द्वारकनाथ

दूसरे दिन कुबेर ने भोजन का आयोजन किया। उस दावत में तरह-तरह के पकवान और मोदक परोसा गया। गणेश खुशी से खा रहे थे।
हाँ... जल्दी-जल्दी परोसो।
आश्चर्य! यह क्या खाना?
अब बस करो। तुम्हारा पेट फूट जाएगा।
कुबेर! इसलिए मैं पेट को साँप
से लिपट लिया हूँ।
जो खाना हजारों लोग खाते थे, वह खाना एक गणेश ही खा लिया। उसे देखकर
गणेश! क्या भूख मिट गयी?
नहीं परोसो।
बावरची खाना बनाते-बनाते थक कर हाथ धोलिया।
कुबेर परमेश्वर से कहा- 'हे परमेश्वर सब को सब कुछ देनेवाले आप को मैं क्या दे सकता हूँ। मेरा गर्व अब चूर-चूर हो गया।
कुबेर का घमंड नष्ट हो गया। गणेश की भूख मिट गयी। परमेश्वर ने कुबेर को आशीर्वाद दिया।
श्रीरस्तु शुभमस्तु
नीति : घमंड गुण नहीं है। वह एक अवगुण है।

स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता...
....
मोबाइल नं...

क्विज-20

1) भगवान विष्णु जी के पत्नी का नाम क्या है?
ज)..
2) कोल्हापुर महालक्ष्मी को किस नाम से पुकारते है?
ज)..
3) तिरुचानूर में विराजित भगवती का नाम क्या है?
ज)..
4) दिवाली के दिन कौन-से देवी की पूजा करते हैं?
ज)..
5) माता पार्वती का पति का नाम क्या है?
ज)..
6) आंध्रप्रदेश, श्रीशैल क्षेत्र के शिखर दर्शन से प्राप्त कौन-सा फल होता है?
ज)..
7) हिरण्यकशिपु का बहन का नाम क्या है?
ज)..
8) हिरण्यकशिपु का पुत्र का नाम क्या है?
ज)..
9) कौरव और पांडवों को अस्त्र-शस्त्र विद्या प्रधान करने वाले गुरु कौन थे?
ज)..
10) अभिमन्यु की पत्नी का नाम क्या है?
ज)..
11) उत्तरा के पुत्र का नाम क्या है?
ज)..
12) शिवरात्रि के दिन किस भगवान जी का पूजा करते है?
ज)..
13) तिरुपति कपिलतीर्थ के पास विराजित भगवान जी का नाम क्या है?
ज)..
14) बृहन्नला से नृत्य विद्या सीखने वाली राजकुमारी कौन है?
ज)..
15) कुबेर को धनाधिपति के रूप में रहने का किसने वरप्रसाद किया था?
ज)..

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) भगवान शिव	अ) तुलसी पत्र
2) श्री महाविष्णु	आ) बिल्व पत्र
3) गणेश	इ) बांसुरी
4) श्री महालक्ष्मी	ई) गरिका
5) श्रीकृष्ण	उ) कमल

1) आ 2) अ 3) ई 4) उ 5) इ

श्री लक्ष्मीदेवी स्तोत्र

मङ्गले मङ्गलाधारे
माङ्गल्ये मङ्गलप्रदे।
मङ्गलार्थं मङ्गलेशि
माङ्गल्यं देहि मे सदा॥

चित्र में अंतर खोजे!

१) बादल
२) तालाब
३) पक्षी
४) पेड़
५) पौधों का फूल
६) महिला के हाथ में फूल
७) पुष्प

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
दिनांक :

स्थान :
दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करों।

STD Code: 0877
दूरभाष :
2264359, 2264543.
संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 26-01-2024 को तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन के प्रांगण में संपन्न 75वाँ गणतंत्र दिवस के महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.करुणाकर रेड्डी जी। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय झंडा को फेहरा कर भाषण देते हुए ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस., ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., उस समय के ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. श्रीमती सदा भार्गवी, आई.ए.एस., और अन्य उच्च पदाधिकारीगण के साथ ति.ति.दे. कर्मचारी ने भाग लिया।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-02-2024 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India
under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "Licenced to post without prepayment
No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 5th of every month.

श्रीलक्ष्मी जयंती 25-03-2024